द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (**M.Ed.**) पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र 2015–2017

(As per NCTE Two Years M.Ed. Programme norms-2014)

(पाठ्यक्रम उद्देश्य, पाठ्यक्रम के मुख्य आधार, पाठ्यक्रम अभिकल्प, पाठ्यक्रम स्वरूप, संचालन नियम, क्रियान्वयन विधि, परीक्षा योजना, प्रश्न पत्र निर्माण एवं पाठ्य वस्तु)

शिक्षा संकाय

जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

ग्राम–मदाऊ पो. भांकरोटा, जयपुर–302026

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (M.Ed.) पाठ्यक्रम उद्देश्य

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड़) पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक माध्यमिक उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्टतत्व प्राप्त अध्यापक तैयार करना है जोकि संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान प्रदान कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- भारतीय ज्ञान, सांस्कृतिक मूल्य एवं परम्पराओं पर आधारित ऐसे प्रशिक्षक/शिक्षक तैयार करना जो शिक्षा महाविद्यालयों में एवं शिक्षा विभाग के माध्यमिक एंव उच्च माध्यमिक विद्यालयीय स्तर पर शिक्षण कार्य कर सकें।
- ऐसे शिक्षित प्रशासक एवं पर्यवेक्षक तैयार करना जो शिक्षा महाविद्यालयों,शिक्षा विभाग, शिक्षा योजना तथा शैक्षणिक पर्यवेक्षक सेवाओं में उत्तरदायी पदों पर कार्य कर सकें।
- ऐसे शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना जो मनोवैज्ञानिक सेवाओं जैसे मनोवैज्ञानिक परीक्षण, व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन व परामर्श, सांख्यिकी सेवाओं एवं शैक्षणिक अभिनव कार्यक्रमों में कार्य कर सकें।
- ऐसे शिक्षक प्रशिक्षक करना जो पाठ्यक्रम संगठन, विकास एवं अनुदेशनात्मक सामग्री का निर्माण कर सकें।
- ऐसे शिक्षक प्रशिक्षित करना जो परीक्षा सुधार कार्यक्रमों एवं शैक्षणिक मूल्यांकन में भाग ले सकें।
- शिक्षक में शोध के आधार पर शिक्षा—साहित्य को समृद्ध शिक्षा के गुणवत्ता की अभिवृद्धि की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में चिन्तन करने की क्षमता का विकास करना।
- शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार से सम्बन्धित सम्प्रत्ययों में अन्तर्दृष्टि का विकास करना।
- शैक्षिक अनुसन्धान की विधियों का प्रयोग संस्कृत शिक्षा के संवर्द्धन में करने की क्षमता का विकास करना।
- शैक्षिक प्रौधोगिकी का शिक्षण—अधिगम परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
- शैक्षिक प्रौधोगिकी का शिक्षण—अधिगम परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
- शिक्षा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य से अवबोध कराना।
- अध्यापक शिक्षा के स्वरूप एवं विकास से परिचित कराना।
- शैक्षिक शोध में प्रदत्त विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन को अनुप्रयोग करने से सम्बन्धित क्षमता का विकास करना।
- पर्यावरण के संरक्षण एवं सुरक्षा के प्रति संवेदनशील बनाना।
- विभिन्न देशों के शिक्षा प्रणाली के स्वरूप एवं संरचना से परिचित कराना।
- संस्कृत शिक्षा के विकास एवं शोध के क्षेत्रों से अवगत कराना।
- प्राम्भिक माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम अभिकल्पन की क्षमता का विकास करना।
- प्राम्भिक माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम अभिकल्पन की क्षमता का विकसित करना।
- किसी शोध समस्या का सोपानिक क्रम में समाधान ज्ञात करने की क्षमता का विकास करना।
- समस्या निरूपण, शोधविधि, प्रतिदर्श एवं उपकरण चयन,प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण से सम्बन्धित क्षमताओं का विकास करना।
- शोध प्रतिवेदन लेखन से सम्बन्धित दक्षताओं का विकास करना।

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम अभिकल्प के मुख्याधार

Major Components	Areas Covered	Description	Suggested Credit Allocation
Common Core (Theory and Practicum included)	Perspective Tool and Teacher Education Courses	1. Perspective Course in the areas of philosophy of Education, Sociology-History, Political, Economy of Education psychology of Education, Education Studies and Curriculum Studies. 2. Tool Course Comprising basic and advanced level education research, academic writing and communication skills educational technology and ICT Self developent (with focus on gender and society inclusive education and mental and physical well-being through modalities such as yoga) 3. Teacher Education Courses (Which are also linked with the filed internship/immersion/ attachment in a teacher education institution) shall also be included in the core.	Perspective 24 Credits Tool Courses:12 Credits: Teacher Education: 8 Credits: (excluding 4 credits for field intenship)
specialization Branches (Theory and practicum Included)	Courses in any one of the school level/areas (such as elementary, or secondary and senior secondary) and further thematic specializations.	The Specialisation branches in one of the school stages: Elementary (upto VIII) or Secondary and senior secondary (VI to XII) each with: 1. Core courses, within elementary/secondrary specialization focussing on mapping the area 2. specialization/elective clusters in theatic areas pertinent to that stage such as curriculum, pedagogy and assessment policy, economics and planning educational management and administration, education for differently abled Education Technology etc.	20 Credits (excluding 4 Credits of field attachment)
Internship/Field Attachment	Teacher Education Institution Institution Related to Specialization	Field Intership/attachment in 1. A Teacher Education Institution and 2. The area of specialization	8 Credits (4 Credits each)
Research leading to Dissertation	Related to Specialization/ Foundations	Students (in close mentorship of a faculty member learn to plan and conduct a research and write a thesis.)	8 Credits
			80 Credits

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम अभिकल्प

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.)पाठ्यक्रम 2000 अंक एवं 80 क्रेडिटस का है जिसकी क्रियान्विति चार सेमेस्टर में होगी। प्रत्येक सेमेस्टर 500 अंक एवं 20 क्रेडिटस का है। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत चार मुख्य घटक हैं – सैद्वान्तिक प्रायोगिक, संस्था सम्बद्वता एवं लघु–शोध प्रबन्ध। इसके अतिरिक्त संगत शैक्षिक गतिविधियों को भी चार सेमेस्टरों में यथा स्थान समाहित किया गया है।

इस घटकों के कोर्सेज का स्वरूप निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत हैं।

कुल अंक 2000 क्रेडिटस 80 + 8

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.)पाठ्यक्रम अभिकल्प

मुख्य घटक (Main Compinats)	कोर्स वर्ग (Categery of Course)	कोर्स संख्या (No of Course)	कुल अंक (Marks)	कुल क्रेडिटस (Credits)	कुल अंक / क्रेडिटस (Total Credits)
(A)सैद्वान्तिक (Theory)	(i) संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	03	300	12	48 (1200 अंक)
	(ii) संकेन्द्रिक उपकरण (Core Tool)	03	300	12	
	(iii) संकेन्द्रिक अध्यापक शिक्षा (Core Teacher Education)	01	100	04	
	(iv) संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	01	100	08	
	(v) वैकल्पिक (Elective)	02	200	08	
	(vi) विशेषज्ञता (Specialization)	01	100	04	
	(vii) विशिष्ट प्रकरण आधारित वैकल्पिक (Theme Based Elective)	01 (क.i.iii) (ख.i.iii)	100	04	
(B)प्रायोगिक (Practicum)		04	400	16	16 (1200 अंक)
(C) संस्था सम्बद्वता (Institution Attachement)		02	200	08	08 (400 अंक)
(D) लघु शोध प्रबन्ध (Dissertation)		.	200	...	08
(E) शैक्षिक गतिविधियां 90% उपस्थिति अनिवार्य (Educationl Activities)		04	200	....	08

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम स्वरूप

कोर्स कोड (Course Code)	कोर्स का नाम (Name of the Course)	कुल अंक (Marks)	क्रेडियस (Credits)	कोर्स की संख्या (No. of Course)	कुल क्रेडिटस (Credits)
	प्रथम सेमेस्टर (First Semester)	**500**	**-**	**-**	**20**
201-202 203-204 211	**सैद्धान्तिक (Theory)**	**400**	**-**	**04**	**16**
	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective) संकेन्द्रिक उपकरण (Core Tool)	200 200	04 04	02 02	08 08
	प्रायोगिक (Practicum)	**100**	**04**	**1 (i-vi)**	**04**
	द्वितीय सेमेस्टर (Second Semester)	**500**	**-**	**-**	**20**
221 222 223 224 231	**सैद्धान्तिक (Theory)**	**400**	**-**	**04**	**16**
	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective) संकेन्द्रिक अध्यापक शिक्षा (Core T-E) संकेन्द्रिक उपकरण (Core Tool) वैकल्पिक (Elective)	100 100 100 100	04 04 04 04	01 01 01 1 (i-v)	04 04 04 04
	प्रायोगिक (Practicum)	**100**	**04**	**1 (i-vi)**	**04**
	तृतीय सेमेस्टर (Third Semester)	**500**	**-**	**-**	**20**
241 242 243 251	**सैद्धान्तिक (Theory)**	**200**	**-**	**02**	**08**
	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100	04	1	04
	विशेज्ञता विषय (Specialization)	100	04	1 (क/ख)	04
	संस्था सम्बद्धता (Institution Attachment)	200	04	02	08
	प्रायोगिक (Practicum)	**100**	**04**	**1 (i-vi)**	**04**
	चतुर्थ सेमेस्टर (Fourth Semester)	**500**	**-**	**-**	**20**
261 262 263 271	**सैद्धान्तिक (Theory)**	**200**	**-**	**02**	**08**
	विशिष्ट प्रकरण आधारित वैकल्पिक (Theme Based Elective) वैकल्पिक (Elective)	100 100	04 04	1 (क/ख–3) 1 (i-v)	04 04
	लघुशोध प्रबन्ध (Dissertation)	**200**	**08**	**-**	**08**
	प्रायोगिक (Practicum)	**100**	**04**	**1 (i-vi)**	**04**
212,232,252,272	**शैक्षिक गतिविधियाँ उपस्थिति * 90% अनिवार्य**	**200**	**02**	**04**	*** 08**

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम संचालन सम्बन्धी नियम :–

1. **पाठ्यक्रम की प्रकृति :–** जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संचालित द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम नियमित प्रकृति का है, इसे केवल नियमित छात्र के रूप में अध्ययन कर पूर्ण किया जा सकेगा।
2. **पाठ्यक्रम में प्रवेश –** जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संचालित द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश राजस्थान सरकार के आदेशानुसार प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली प्रवेश पूर्व शिक्षाचार्य परीक्षा (PSAT) उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को वर्गवार वरीयता के आधार पर ही दिया जा सकेगा।
3. **पाठ्यक्रम अवधि :–** शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम की अवधि दो अकादमिक वर्षों (Two Academic Years) की होगी। इसे चार सत्रार्द्धों (Semesters) में विभक्त कर पूर्ण किया जा सकेगा।
4. **कार्य दिवस :–** नामांकन एवं परीक्षा अवधियों को छोड़कर दो सौ (200) कार्य दिवस प्रतिवर्ष होंगे।
5. **छात्र उपस्थिति :–** द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम के सभी अध्येयांशों (Courses) में 80% तथा विद्यालय सम्बद्धता, क्षेत्र सम्बद्धता एवं शैक्षिक गतिविधियों में 90% उपस्थिति अनिवार्य होगी।
6. **अध्यापन, लघुशोध प्रबन्ध लेखन, सत्रीय कार्य एवं परीक्षा का माध्यम :–** अध्ययन–अध्यापन, लघुशोध प्रबन्धन, सत्रीय कार्य, प्रायोगिक कार्य लिखित एवं मौखिक परीक्षा का माध्यम संस्कृत होगा।
7. **वार्षिक परीक्षा में प्रवेश अर्हता** :– जिन शिक्षाचार्य प्रशिक्षणार्थियों/छात्रों ने द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम के सभी अध्येयांशो (Courses) को संत्राश–वार 80% एवं विद्यालय सम्बद्धता, क्षेत्र सम्बद्धता व शैक्षिक गतिविधि से सम्बन्धित प्रायोगिक कार्यों को सत्रांश–वार 90% उपस्थिति के साथ पूर्ण किया हो तथा समस्त सत्रीय कार्य/दत्त कार्य, लघुशोध प्रबन्ध आदि यथासमय पूर्ण कर प्रस्तुत किये हों, ऐसे प्रशिक्षणार्थी/छात्र ही द्विवर्षीय शिक्षाचार्य के सत्रार्द्ध परीक्षाओं में प्रवेश के लिए अर्ह (पात्र) होंगे।
8. **परीक्षा व स्वरूप** :– द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम की परीक्षा सत्रार्द्ध प्रणाली से आयोजित होगी।
9. **अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए पुनः अवसर** :–

(अ) यदि कोई छात्र सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों में से किसी एक विषय में प्रथम सत्रार्द्ध में अनुत्तीर्ण हो जाता है और उसके अन्य विषयों के प्राप्तांक 48% या उससे अधिक हैं तो वह उस एक विषय की परीक्षा द्वितीय सत्रार्द्ध की वार्षिक परीक्षा के साथ दे सकेगा। इसी प्रकार द्वितीय सत्रार्द्ध के अनुत्तीर्ण छात्र तृतीय सत्रार्द्ध के साथ तथा तृतीय सत्रार्द्ध के अनुत्तीर्ण छात्र चतुर्थ सत्रार्द्ध के साथ परीक्षा दे सकेगा।

(ब) कोई भी छात्र दो प्रयासों के बाद शिक्षाचार्य की परीक्षा में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा। दोनों प्रयासों में असफल तथा शिक्षाचार्य अनुत्तीर्ण छात्रों को शिक्षाचार्य प्रवेश पूर्व परीक्षा (P.S.A.T.) के माध्यम से पुनः द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जा सकेगा।

पाठ्यक्रम क्रियान्वयन विधि :–

द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित विधियों का यथा अवसर प्रयोग किया जाएगा :–

(i) **व्याख्यान विधि** (Lecture Method) :– इस विधि का प्रयोग संवादपरकता के साथ किया जाएगा। जिससे अध्यापन में छात्र केन्द्रिता बनी रहे तथा छात्रों की विषय–विश्लेषण योग्यता एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया सके।

(ii) **संगोष्ठी** :– (Seminar) इस विधि द्वारा पाठ्क्रम में निर्धारित विभिन्न विषय सन्दर्भ तथा विद्यालयस्तरीय समसामयिक समस्याओं पर छात्रों के स्वतंत्र चिन्तन शक्ति तथा अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया जायेगा।

(iii) **परिचर्चा (Discussion) :–** इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में परिचर्चा विधि का भी प्रयोग दो प्रकार से किया जायेगा–युग्म परिचर्चा एवं समूह परिचर्चा युग्म परिचर्चा के अन्तर्गत छात्रों के युग्म (जोड़े) बनाकर तथा समूह परिचर्चा में कक्षा को छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षक द्वारा दिये गये विषय पर चर्चा सम्पन्न करवायी जायेगी। इससे छात्रों में विषय का संश्लेषण, एवं मूल्यांकन करने से सम्बन्धी दक्षताओं का विकास होगा।

(iv) **दत्त कार्य (Assignment)** :– इस विधि का प्रयोग छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति–मुख्य रूप से विषय का अवबोध, विश्लेषण, संश्लेषण मूल्यांकन तथा समीक्षा से सम्बन्धित क्षमताओं के विकास करने हेतु किया जायेगा।

(v) **प्रश्नोत्तरी (QUIZ) :–** इस विधि का प्रयोग इकाई समापन एवं कक्षा शिक्षण के समय किया जायेगा। इसमें कक्षा छात्रों के विभिन्न समूहों के समक्ष शिक्षण विषय की इकाईयों से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ प्रश्न अध्यापक द्वारा प्रस्तुत करके प्रश्नोत्तरी के रूप में इसे सम्पन्न किया जायेगा।

(vi) **विचारावेश (Brinstorming)** :– इस रचनाकौशल का प्रयोग छात्रों के सृजनात्मक समाधान योग्यता विकास हेतु किया जाता है। अतः कक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान ढूंढने हेतु इसका प्रयोग किया जायेगा।

(vii) **इकाई परीक्षण (Unit Test)** :– पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित इकाईयों के समापन के पश्चात वस्तुनिष्ठ एवं लघूत्तरीय प्रश्नों पर आधारित मौखिक या लिखित परीक्षण छात्र के अवबोध परीक्षण हेतु किया जायेगा।

(viii) **परियोजना विधि (Project Method) :–** इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान पर आधारित परियोजना निर्माण व कार्य करवाये जायेंगे।

प्रश्न पत्र निर्माण –

1. प्रत्येक प्रश्न–पत्र के तीन भाग होंगे–अ,ब और स।
2. भाग 'अ' में 05 अतिलघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
3. भाग 'ब' में 05 लघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का होगा।
4. भाग 'स' में आंतरिक विकल्प वाले 05 निबन्धात्मक प्रश्न होंगे और प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा। इस प्रकार प्रश्न पत्र में तीनों भागों को मिलाकर कुल 15 प्रश्न होंगे ।
5- अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा पन्द्रह से बीस (15–20) शब्दों की होगी।
6. लघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य सम्प्रत्यय, परिभाषा, नियम सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा एक पृष्ठ होगी।
7. निबन्धात्मक प्रश्नों का उद्देश्य प्ररिप्रेक्ष्य–ज्ञान, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। जो सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित होंगे।
8. केवल विषयवस्तु (Content) पर आधारित कोई भी प्रश्न नहीं होगा। प्रत्येक प्रश्न विधियों (Methodology) के अनुप्रयोग से जोड़कर बनाया जायेगा।

स्पष्टता हेतु प्रश्न पत्र का स्वरूप विवरण :–

सैद्धान्तिक पत्रों हेतु प्रश्नपत्र का स्वरूप

(Structure of the Question paper for Theory Papers)

कुल अंक = 100

(Totel Marks)

80 अंक = बाह्य (लिखित परीक्षा)

80 Marks = External (Written Examination)

20 अंक = आन्तरिक (सत्रीय कार्य)

20 Marks = Internal (Sessional Work)

समय – 3 घंटे **लिखित परीक्षा हेतु प्रश्न स्वरूप** **पूर्णांक – 80**

प्रश्न का स्वरूप (Form of the Question)	प्रश्न प्रकार (Type of Question)	प्रश्नों की संख्या (No.of Questions)	प्रश्न/अंक (Question /Marks)	कुल अंक (Total Marks)
(अ) अनिवार्य (Compulsory)	अतिलघूत्तरात्मक In (15–20) Words	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	05 प्रश्न/02 अंक	5 (प्रश्न)x2(अंक) = 10
(ब) अनिवार्य (Compulsory)	लघूत्तरात्मक (Short Answer)	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	05 प्रश्न/04 अंक	5 (प्रश्न)x4(अंक) = 20
(स) आन्तरिक विकल्प (Internal Choice)	निबन्धात्मक) (Essy Tipe)	5 (प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न) (Two Question from each unit)	05 प्रश्न/10 अंक	5 (प्रश्न)x10(अंक) = 50
		कुल अंक (Total Marks)		80 अंक

शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर

शिक्षाचार्य – प्रथम सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–1 शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 201 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य

- भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और दर्शन की प्रकृति से अवगत कराना।
- भारतीय एवं पाश्चत्य दर्शन के विविध संप्रदायों के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों का समीक्षात्मक विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- शैक्षिक सम्प्रत्ययों, प्रतिमानों, एवं धारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- मूल्यशिक्षा, उसके विविध आयामों और शान्तिशिक्षा के संप्रत्ययों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना

पाठ्यवस्तु (Content) 80 अंक

इकाई–1 शिक्षा दर्शन – शिक्षा दर्शन की प्रकृति, निर्देशात्मक सिद्धान्त, दर्शन के उदारवादी दृष्टिकोण का शिक्षा पर प्रभाव। शिक्षादर्शन के कार्य–नियामक एवं विश्लेषणात्मक प्रकार्य। शिक्षा दर्शन की प्रमुख शाखाएं – तत्व – मीसांसा, ज्ञान–मीमांसा, मूल्य–मीमांस एवं तर्कशास्त्र, (अभिप्राय व शैक्षिक निहितार्थ)।

इकाई–2 भारतीय दर्शन एवं शैक्षिक चिन्तन – चार्वक, जैन, बौद्ध, सांख्ययोग, मीमांसा एवं वेदान्त में यथार्थ, सत्य एवं मूल्य की संकल्पना एवं उनका शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–3 दर्शन के सम्प्रदाय – भारतीय एवं पाश्चात्य सन्दर्भ में–विचारवाद (आदर्शवाद) यथार्थवाद, प्रयोजनवाद एवं अस्तित्ववाद, मानववाद की अवधारणायें। भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तक आचार्य शंकर भगवत्पाद, विनोवाभावे, स्वामी विवेकानन्द श्री अरविन्द, जे कृष्णमूर्ति, काण्ट, जॉन डीवी एवं बर्ट्रेण्ड रसेल के विचारों का शैक्षिक निहितार्थ। कतिपय समसामायिक शैक्षिक समस्याओं एवं मुद्दों पर भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों के चिन्तन परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करना।

इकाई–4 मूल्यपरक शिक्षा – मूल्य की अवधारणा (सामाजिक, आध्यत्मिक व नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में), भारतीय संविधान में निहित शैक्षिक, राष्ट्रीय एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन। सर्वधर्मसम्भाव (भारतीय परिप्रेक्ष्य में) शिक्षा एवं शिक्षण हेतु निहितार्थ।शान्ति शिक्षा।

इकाई–5 अध्यापन व्यवसाय में व्यावसासिक निष्ठा का विकास – व्यावसासिक प्रतिवद्धता एवं अद्यतन संदर्भ में अध्यापन शिक्ष ामें व्यावसायिक निष्ठा विकसित करने की युक्तियां एवं परिप्रेक्ष्य। शिक्षक आचार संहिता–राष्ट्रीय संदर्भ में विहित अपेक्षाएं। व्यावसायिक प्रतिबद्धता विकास के कार्यक्रम। व्यावसासिक निष्ठा के सन्दर्भ में भारतीय चिन्तकों का अवदान।

सत्रीय कार्यः **20 अंक**

निम्नालिखित में से कोई दो

1. भारतीय विचारकों के चिन्तन पर आधारित शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य एवं अर्न्तवस्तु, शिक्षक–शिष्य के संबंध इत्यादि पर केन्द्रित कार्यशाला एवं प्रतिवेदन लेखन।
2. शैक्षिक समस्याओं का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण हेतु समूह परिचर्चा एवं प्रतिवेदन निर्माण।
3. विमर्शी परिचर्चाएं– राष्ट्रीय एवं अन्तर्राराष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित एंव प्रतिवेदन निर्माण।
4. समीक्षात्मक लेख प्रस्तुतीकरण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1 पाण्डेय, के.पी. (2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2 पाण्डेय, आर.एस. (1997) शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ.प्र.।

3 गैरोला, वाचस्पति, (1995) भारतीय दर्शन, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।

4 शर्मा, चन्द धर, (1995) भारतीय दर्शनः आलोचना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5 झा. नागेन्द्र (1992) वैदिक शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति, वेंकटेश प्रकाशन, नई दिल्ली।

6 मिश्र, भास्कर (2001) वैदिक शिक्षा मीमांसा, ईस्टन बुक लिंकर्स, चन्द्रावल, दिल्ली।

7 मिश्र, भास्कर (2000) शिक्षा संस्कृति नये सन्दर्भ में, भावना प्रकाशन नई दिल्ली।

8 भण्डारी,आर एवं विजय श्री, (1998) भारतीय दार्शनिक चिन्तन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन

9 Vinoba Bhave Acharya, Thoughts on Education; (1985) Sarva Seva Sangh, Varanasi

10 पाठक आर.पी. (2011) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।

11 उपाध्याय, आचार्य,बलदेव (1991) भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर, वाराणसी।

12 रस्क, आर. (1970) शिक्षा के दार्शनिक आधार जयपुर, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

13 पाठक, आर.पी. (2009) भारतीय परम्परा में शैक्षिक चिन्तन, कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली।

14 पाठक, आर.पी. (2011) भारत के महान शिक्षाशास्त्री, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।

15 पाठक, आर.पी. (2012) विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।

16 ओड, एल.के (1990) शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठ भूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

17 नेल्सन, वी.एच. (1990) मार्डन फिलासाफीज एण्ड एजूकेशन, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।

18 लाल, रमन बिहारी, एवं पलोड़, सुनीता (2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, उ.प्र.।

19 शर्मा, आर. ए (1995) तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, मूल्य मीमांसा, एवं शिक्षा, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ,उ.प्र.।

20 लाल, रमन बिहारी (2007)शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.।

21 ब्रूवेकर जे.एस. (1969)मार्डन फिलॉससफीज ऑफ एजुकेशन, मैकग्राहिल, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

शिक्षाचार्य – प्रथम सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–2 शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 202 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य

- भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान की अवधारणा के सन्दर्भ में शिक्षा, शिक्षणा, अधिगम एवं अभिप्रेरणा की परिस्थितियों कें विश्लेषण एवं अवबोध हेतु परिप्रेक्षय विकसित करना।
- शिक्षण अधिगम की प्रभावी व्यवस्थाओं एवं अभ्किल्पों को निर्मित करने हेतु बुद्धि, सर्जनात्मकता, एवं व्यक्तित्व विषयक अद्यतन सिद्धान्तों पर केन्द्रित उपयुक्त परिप्रेक्ष्य विकसित करना।
- अन्तर्द्वन्द्र, समयोजन प्रकिया, प्रतिरक्षा किया विधि तथा तनाव प्रबान्धन का शिक्षण की विविध व्यावहारिक परिस्थितियों में निहितार्थ निरूपण की कुशलता विकसित करना ।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 शिक्षा मनोविज्ञान – भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान की अवधारणा, मानसिक शक्ति एवं चेतना के उन्नयन में अष्टांग योग एवं ध्यान का महत्व। मनोविज्ञान के सम्प्रदाय– व्यवहारवादी, संज्ञानवादी तथा रचनावादी परिप्रेक्ष्य की शिक्षा में प्रासंगिकता के सन्दर्भ में।

इकाई–2 अधिगम तथा अभिप्रेरणा का मनोविज्ञान – अधिगम तथा अभिप्रेरणा की अवधारणा, अधिगम का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन, पियाजे ब्रूनर तथा ऑसबेल की दृष्टि में अधिगम की अवधारणा, सिद्धान्त तथा अनुप्रयोग । अद्यतन रचनावादी अवधारणायें तथा उनका शैक्षिक निहितार्थ। अभिप्रेरणा के सिद्धान्त मॉसलो कें अभिप्रेरणा सिद्धान्त का एल्डरफर द्वारा संशोधित एवं विकसित प्रतिमान तथा विक्टर रूम के प्रत्याशा सिद्धान्तों का कक्षागत शिक्षण सन्दर्भ में अध्ययन, पुरूषार्थ चतुष्टय की अवधारणा तथा वर्तमान में प्रासंगिकता।

इकाई–3 बुद्धि एवं सर्जनात्मकता का मनोविज्ञान – भारतीय सन्दर्भ में प्रज्ञा, मन बुद्धि, चित एवं अंहकार तथा पाश्चात्य सन्दर्भ में बुद्धि की अवधारणा बुद्धि कें सिद्धान्त गिलफोर्ड, गाडर्नर का बहुबुद्धि सिद्धान्त संवेगात्मक एवं आध्यत्मिक बुद्धि की अवधारणा तथा निहितार्थ। प्रत्यय निर्माण प्रकार तथा विकास। सर्जनशीलता–अवधारणा, पहचान तथा संवर्धन कें उपयों का शैक्षिक सन्दर्भ मं अध्ययन। सर्जनशीलता के रूप में प्रतिमा एवं क्षमता की भारतीय अवधारणा। बुद्धि तथा सर्जनात्मकता का मापन।

इकाई–4 व्यक्तित्व का मनोविज्ञान – अवधारणा, सिद्धान्त मनोविश्वलेषणं सिद्धान्त फायड, युंग, एडलर, शैक्षिक सिद्धान्त–आलपोर्ट, कैटल, आइजेन्क मानवतावादी सिद्धान्त– मॉसलो, काले रोजर्स सभी सिद्धान्तों का शैक्षिक निहितार्थ निरूपण। पंचकोशों की अवधारणा,व्यक्तित्व का मापन।

इकाई –5 अन्तर्द्वन्द एवं समायोजन – अन्तर्द्वन्द सम्प्रत्यय एवं प्रकार तथा अन्तर्द्वन्द समाधान कें उयाय समायोजन–अवधारणा, प्रक्रिया विशेषताएं। भारतीय दृष्किोण में योग एवं गीता का समायोजन के सन्दर्भ में शैक्षिक निहितार्थ। प्रतिरक्षा क्रियाओं तथा अन्य विधियों द्वारा तनाव प्रबन्धन सुस्थित जीवन शैली का विकास एवं एतदर्थ प्रबन्धन की युक्तियां।

सत्रीय कार्यः **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1 भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान के मुख्य तत्वों पर आधारित समूह परिचर्चा।

2 प्रत्यय निर्माण आधारित प्रयोगात्मक कार्य।

3 किसी बालक का सर्जनशीलता के सन्दर्भ में व्यष्टि अध्ययन।

4 सुविधा वंचित एवं अधिगम अक्षम बालकों के सन्दर्भ मे समायोजन की युक्तियों पर आधारित कार्यशाला।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. सिंह (2006) अरूण कुमार शिक्षा मनोविज्ञान,भारती भवन,आगरा,उ.प्र.।
2. जायसवाल, सीताराम, (1990) भारतीय मनोविज्ञान और शिक्षा,आर्य बुक डिपो दिल्ली।
3. पाण्डेय,के.पी. (2005) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,उ.प्र.।
4. चौबे एस.पी. (1995) शिक्षा मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा उ.प्र.।
5. पाण्डेय आर.एस. (1995) शिक्षा मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा उ.प्र.।
6. पाल, हंसराज (2006) प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली वि.वि.।
7. गुप्ता एस.पी. (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद।
8. मंगल एस.के. (2006) शिक्षा मनोविज्ञान, प्रेन्टिस हाल आफ इंडिया प्रा.लि. नई दिल्ली।
9. पाठक,आर.पी. (2006) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान – एक परिचय राधा प्रकाशन नई दिल्ली।
10. पाठक,आर.पी. (2006) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान पियर्सन एजुकेशन नालेज पार्क, नोएडा, उ.प्र.।
11. पाठक, आर.पी. (2010) भारतीय मनोविज्ञान कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
12. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2013) शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व, कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।
13. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2014) शिक्षा मनोविज्ञान के आधार,, कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।

14- Bandura, A. and Walters (1936) R.H.Social Lerning and Personality Development Holt Rinehart and Winston.

15- Hilgard E.R. and Bower Gardon H. (1977) Theories of Learning Prentice Hall of India New Delhi.

16- Chauhan S.S. (1998) Advanced Educational Psychology Vikas Publishing House New Delhi.

17- Mathur S.S. (2000) Educational Psychology (Hindi Edition Also) Vinod Pustak Mandir Agra.

18- Pandey, K.P. (1998) Advanced Educational Psychology Konark Pub Lishers.

शिक्षाचार्य – प्रथम सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–3 शैक्षिक अनुसन्धान

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 203 — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- शैक्षिक अनुसन्धान की अवधारणा एवं आधार भूत सोपानों से परिचित कराना।
- शैक्षिक अनुसंधान के मात्रात्मक एवं गुणात्मक उपागमों में निहित शोध प्रक्रिया में अन्तरों को स्पष्ट कराना।
- शोध की विविध विधियों मात्रात्मक एवं गुणात्मक के सन्दर्भ में प्रवीणता विकसित करना।
- शिक्षा की विविध क्षेत्रों में कृत शोधों के सम्बन्ध में अनुक्षेत्र आधारित एवं प्रतिमान आधारित संवदेनशीलता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई– 1. शैक्षिक अनुसंन्धान – शैक्षिक अनुसंधान की प्रकृति एवं अन्तर्विद्यापरकता, शैक्षिक अनुसंन्धान के उद्देश्य,सिद्वान्त परीक्षण एवं शैक्षिक परिस्थितियों का उन्नयन। शैक्षिक अनुसन्धान में प्रयुक्त प्रतिमान–मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथा दोनों मे अन्तर एवं समानता । शैक्षिक अनुसन्धान में प्रयुक्त प्रतिमान–मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथा दोनों में अन्तर एवं समानता। शैक्षिक अनुसन्धान के स्वरूपों का वर्गीकरण–मौलिक, व्यवहत एवं क्रियात्मक।

इकाई–2 शैक्षिक अनुसंधान क्षेत्र एवं सोपान – शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र अनुसंधान अनुक्षेत्रों का वर्गीकरण। अद्यतन शैक्षिक अनुसंधान क्षेत्र अनुसंधान क्षेत्रों के निर्धारित में नवीन प्रवृतियॉ। शैक्षिक शोध के आधारभूत सोपान – समस्या अनुक्षेत्र चयन,समस्या से सम्बन्धित साहित्य का विशिष्ट सर्वेक्षण, शोध समस्या का निर्धारण,शोध अभिकल्प निर्धारण, आभार सामग्री का संकलन, विश्लेषण एवं निर्वचन, सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष निरूपण।

इकाई–3 शोध समस्या निरूपण एवं परिकल्पना निर्माण – शोध समस्या निरूपण–पारिभाषीकरण, सीमांकन, चरों की पहचान, समस्या मूल्यांकन, शोध प्रश्न का निर्माण। शोध परिकल्पना निर्माण एवं उसका परीक्षण।

इकाई–4 शोध का समग्र एवं प्रतिदर्श चयन – शोध समग्र का पारिभाषीकरण, प्रतिदर्श चयन की विधियॉ – सम्भाव्यता एवं असम्भाव्यता आधारित मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोध संदर्भ में प्रतिदर्श चयन एवं उनकी विशिष्टता शोध समग्र एवं प्रतिदर्श द्वारा उपलब्ध मानक–पैरामीटर तथा सांख्यिकी।

इकाई–5ः शोध उपकरण – शोध उपकरणों के प्रकार, आवश्यकता विशेषताएँ, विश्वसनीयता, वैधता एवं प्रासंगिकता। मात्रात्मक शोधों में प्रयुक्त शोध उपकरण–प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रेक्षण, निर्धारण मापनी, परीक्षण, समाजमिति। गुणात्मक शोधों मे प्रयुक्त शोध उपकरण– साक्षात्कार, प्रेक्षण (प्रतिभाग आधारित) अभिलेख, संकेन्द्रित समूह परिचर्चा, व्यष्टि अध्ययन।

सत्रीय कार्य :– — **20 अंक**

1. मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोधों पर आधारित प्रतिवेदनों, शोध प्रत्रिकाओं में प्रकाशित शोधों से संबधित अध्ययनों का समीक्षात्मक शोध सारांश प्रस्तुत करना। (प्रत्येक छात्र को कम से कम दो ऐसे शोध सारांश अवश्य प्रस्तुत करने होगें।)
2. किसी चयनित शोध समस्या पर शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करना।
3. संदर्भ ग्रन्थों सम्बन्धित शोध साहित्य एवं विशिष्ट शोध ग्रन्थों पर आधारित प्रस्तुतियॉ।
4. शोध अभिकल्प निर्मित करना (यह शोध अभिकल्प मात्रात्मक एवं गुणात्मक किसी भी प्रतिमान के अनुसार विकसित किया जा सकता है।)

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय के.पी. (1998) शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,उ.प्र.।
2. त्रिपाठी,एल.बी.एवं भार्गव, हरप्रसाद, (1990) मनोवैज्ञानिक अनुंसधान पद्वति, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ.प्र.
3. गुप्ता,एस.पी. (1998) शिक्षा में सांख्यिकी, शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद उ.प्र.।
4. पाण्डेय,के.पी. (2005) शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी उ.प्र.।
5. गुप्ता एस.पी. (2000) अनुसंधान संदर्शिका,शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद,उ.प्र।
6. पाठक,आर.पी.एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2012) शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।

7. शर्मा, आर.ए. (2005) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, उ.प्र.।
8. भटनागर, ए.बी. (2002) शिक्षा अनुसंधान की कार्यप्रणाली आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.।
9. Pathak, R.P. (2011) Research in Psychology and Education, Pearson Education, Knowledge Park, Noida

शिक्षाचार्य – प्रथम सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–4 शैक्षिक प्रौद्योगिकी

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 204 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

1. शैक्षिक प्रौधोगिकी की अवधारणा के सम्प्रत्यय,प्रकार एवं उपागमों से अवगत कराना।
2. शैक्षिक सम्प्रेषण के सम्प्रत्यय एवं विधियों से अवगत कराना।
3. अनुदेशनात्मक प्रणालियों के उद्देश्यों एवं अभिकल्पन से अवगत कराना।
4. महत्वपूर्ण शिक्षण प्रतिमानों और सिद्वान्तों से अवगत कराना।
5. अभिक्रमित अधिगम की अवधारणा,सिद्वान्त,प्रकार और निर्माण प्रक्रिया से अवगत कराना।
6. शिक्षण अधिगम प्रबन्धन के चार घटक–नियोजन,संगठन,अग्रसरण एवं नियत्रंण में अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
7. शिक्षण के प्रतिमान एवं सिद्वान्तों के सम्प्रत्यात्मक अवधारणा एवं प्रकारों से परिचित करना।
8. अभिक्रमित अधिगम की अवधारणा एवं विकास की अवस्थाओं में अवबोध विकसित करना।
9. व्यवस्थित प्रेक्षण विधियों द्वारा शिक्षण व्यवहार का विशलेषण करने की दक्षता का विकास करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई– 1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी –

- अभिप्राय, प्रकृति, उद्देश्य,उपागम एवं क्षेत्र, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, अवधारणा, उद्देश्य एवं क्षेत्र। प्रोडक्ट टेक्नोलॉजी एवं आइडिया टेक्नोलॉजी दोनों में समन्वय। वर्तमान संदर्भ में शैक्षिक प्रौद्याोगिकी–टेलीकान्फ्रेसिंग (ऑडियो एवं विडियो) एडूसेट, सम्प्रेषण एवं सूचना प्रौद्योगिकी (ICT) एवं इसका शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों में अनुप्रयोग। ई–अधिगम की अवधारणा शैक्षिक सम्प्रेषण– अवधारणा अवयव, प्रक्रियां, अवरोधक तत्वों को न्यून बनाने के उपाय तथा मल्टी मीडिया की अवधारणा एवं प्रयोग। ई–अधिगम–अवधारणा, विशेषताएं प्रारूप, शैलियॉ लाभ एवं सीमाएं।

इकाई–2 शिक्षण अधिगम का प्रबन्धन

- नियोजन कार्य विश्लेषण, प्रशिक्षण एवं अधिगम की आवश्यकताओं को पहचानना और शैक्षिक उद्देश्यों का प्रतिपादन। संगठन – उपयुक्त युक्तियों कक्षा आकार एवं सम्प्रेषण, व्यूहरचना का चयन। अग्रसरण – अग्रसरण हेतु अभिप्रेरण का अनुप्रयोग और उपयुक्त रचना कौशल का चयन । नियंत्रण – अधिगम प्रणाली का मूल्यांकन मापन एवं उद्देश्य।

इकाई–3 शिक्षण सिद्वान्त एवं प्रतिमान

- प्रतिमान एवं सिद्वान्त की अवधारणा मे मुख्य अन्तर।
- शिक्षण के सिन्द्वान्त – धांत्री सिद्वान्त सम्प्रेषण ढलाई का सिद्वान्त परस्पर पृच्छा सिद्वान्त (विशेषताएं सीमाएं एवं शैक्षिक निहितार्थ)
- शिक्षण के प्रतिमान– अवधारणा एवं आधारभूत तत्व। कुछ चयनित शिक्षण प्रतिमान– विकासात्मक प्रतिमान (पियाजे) एडवान्स आरगनाईजर (ऑसवेल) पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान (सचमैन) शिक्षक प्रशिक्षक प्रतिमान सम्प्रत्यय सम्पाप्ति प्रतिमान (हिल्डा–ताबा) के अवयव, विशेषताएं सीमाएं एवं शैक्षिक निहितार्थ तथा प्रत्येक शिक्षणप्रतिमान पर आधारित पाठ–योजना

इकाई–4 अभिक्रम अधिगम की तकनालाजी

- अभिक्रमित अधिगम की अवधारणा तथा ऐतिहासिक विकास। अभिक्रमित अधिगम के सिद्वान्त एवं प्रकार (रेखीय,शाखीय तथा मैथेटिक्स) कम्प्यूटर सहायक अनुदेशनप।

अभिक्रम विकास की अवस्थाएं –

- अभिक्रम नियोजन – प्रकरण चयन,विषय वस्तु विश्लेषण, अधिगमकर्त्ता की मान्यताएं, उद्देश्य लेखन, पूर्व अपेक्षित कौशल एवं निष्कर्ष परख निर्माण।
- अभिक्रम लेखन – अभिक्रम के संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक तत्व, पद लेखन एवं अनुक्रम अभिक्रम संपादन एवं संशोधन।
- अभिक्रम परीक्षण – व्यक्तिगत, लघुसमूह और क्षेत्र परीक्षण।
- अभिक्रम का मूल्याकंन – त्रुटि दर, अभिक्रम घनत्व, अनुक्रम प्रगमन और 90/90 मानक स्तर।

इकाई – 5 शिक्षण व्यवहार विश्लेषण एवं आशोधन – शिक्षण व्यवहार की अवधारणा विशेषतायें क्षेत्र एवं नवीन प्रवृत्तियॉ शिक्षण व्यवहार का व्यवस्थित प्रेक्षण– युक्तियॉ एवं उनका अनुप्रयोग (फ्लैण्डर का अन्तक्रिया विश्लेषण श्रेणियॉ – FIAC ओबर्स की पारस्परिक अनुवर्ग विधि – RCS बेन्टले और मिलर की समकक्ष वार्ता श्रेणी विधि – ETC) के सन्दर्भ में। व्यवस्थित प्रेक्षण से प्राप्त प्रदत्तों का आधात्री निर्माण एवं विश्लेषण (FIAC,RCS & ETC) के सन्दर्भ में। शिक्षण व्यवहार आशोधन में व्यवस्थित प्रेक्षण विधि का अनुप्रयोग, प्रतिपुष्टि एवं अपेक्षित शिक्षण व्यवहार सृजन। कम्प्यूटर अनुप्रयोग द्वारा शिक्षण व्यवहार आशोधन – किसी शैक्षिक कार्य में MS Word का प्रयोग (दत्तकार्य, शोध पत्र आदि के सन्दर्भ में) किसी विद्यालयीय शिक्षण पाठ का पावर पाइन्ट निर्माण एवं प्रस्तुति,किसी प्रशासनिक कार्य में MS-Excel का प्रयोग (समय सारिणी, उपस्थिति एवं छात्र उपलब्धियों के रिकार्ड के सन्दर्भ में) एवं किसी शैक्षिक सूचना को इन्टरनेट में माध्यम से अधिगम्य बनाना।

सत्रीय कार्य :– **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. शिक्षण प्रतिमानों पर आधारित पाठयोजना निर्माण।
2. रेखीय अभिक्रम निर्माण (किसी विद्यालयीय विषय पर)।
3. किसी व्यवस्थित प्रेक्षण विधि का प्रयोग द्वारा शिक्षण व्यवहार विश्लेषण एवं आशोधन।
4. पावर पाइन्ट प्रस्तुति निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण (किसी विद्यालयीय विषय पर)
5. इन्टरनेट द्वारा किसी शैक्षिक सम्प्रत्यय से सम्बन्धित सूचना डाउनलोड करना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. मिश्र,करूणा शंकर (1995) शिक्षण में नवचिन्तन,संज्ञानालय,कानपुर,उ.प्र.।
2. पाण्डेय,के.पी.(1992) अभिक्रमित अधिगमन की टेकनालॉजी विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी,उ.प्र.।
3. पाठक,आर.पी.(2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी पियर्सन एजुकेशन,नई दिल्ली।
4. पाठक, आर.पी.एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2012) शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।
5. शर्मा,आर.ए. (2002) शिक्षा के तकनीकी आधार आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
6. भटनागर,ए.बी (2000) शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्धन,आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र।
7. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2006)शिक्षण की तकनीकी, आर.लाल बुक डिपो मेरठ मेरठ उ.प्र.।
8. शर्मा,आर.ए.(2010) सूचना सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीकी,आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
9. शर्मा,आर.ए.(2005) शिक्षणशास्त्र के मूल तत्व,आर.लाल बुक डिपो मेरठ,उ.प्र.।
10. पाठक आर.पी.(2014) शैक्षिक तकनीकी के आयाम विकास पब्लिशर्स,नई दिल्ली।

11- Pandey,K.P(1997) Modern Concepts of Teaching Behaviour,Anamika Publications New Delhi.
12- K.Sampat and et All (1990) Education Technology Sterling Publishing Pvt.Ltd. New DelhiA
13- Bruner J.S.(1980) Towards Theory of Instruction Mass Hardward University Press,Cambridge.
14- Singh L.C.(1990) Microteaching, Bhagava Book Depot Agra, U.P.
15- Allen and Ryan(1985) Microteaching addison Wesley, New York
16- Shelter P.A(1980) History of Instructional Technology,Megran, New York.
17- Bruce Joyce and Marsha Weil (1975) Models of Teaching Prentice Hall of India New Delhi.
18- Passi B.K.(1985) Becoming Better Teacher Sahitya Mudranalaya Ahadabad.
19- Pathak.R.P(2010) Educational Technology Pearson Education New Delhi.

द्वितीय सेमेस्टर
शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–5 शिक्षा का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 221 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

1. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अद्यतन भारतीय समाज की समस्याओं के विश्लेषण एवं समीक्षात्मक अध्ययन की कुशलता विकसित करना।
2. शिक्षा के समसामयिक मुद्दों पर परिचर्चा आधारित विमर्श को प्रोत्साहित करना।
3. भारतीय समाज की ज्वलन्त समस्याओं यथा शैक्षिक अवसरों की समानता विषमता भेदभाव एवं लिंग अनुपात समुदाय/अंचल आधारित मुद्दों पर विशेष चिन्तन परिप्रेक्ष्य विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई– 1. शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार– शिक्षा का समाजशास्त्र सामाजिक उपव्यस्था के रूप में शिक्षा एवं समुदाय (भारतीय समाज के सन्दर्भ में) शिक्षा और राजनीति। शिक्षा व धर्म शिक्षा एवं सस्कृति।

इकाई–2 शिक्षा एवं समसामयिक विकास – आधुनिकीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक एवं सामाजिक विकास।

इकाई–3 शिक्षा एवं मानवविकास– सुस्थिर विकास–संप्रत्यय एवं इसमें शिक्षा की भूमिका। विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के सन्दर्भ में मानवविकास सूचकांक । भारत की अनुस्थिति अन्य देशों के सापेक्ष में शिक्षा के योगदान का आकलन।

इकाई–4 शिक्षा एवं सामाजिक न्याय– सामाजिक समदृष्टि शैक्षिक अवसरों की समानता से सम्बद्व कतिपय महत्वपूर्ण तत्व जाति, नृजातीयता एवं आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्ग के संदर्भ में शिक्षा महिलाओं व ग्रामीण जनता की शिक्षा।

इकाई– 5 भारतीय संविधान की अपेक्षाओं के अनुसार– भारतीय समाज की कतिपय बहुचर्चित समस्याएं यथा शैक्षिक अवसरों की समानता, शिक्षा का अधिकार, बालश्रम, नारी सशक्तीकरण, सुविधावंचित संवर्ग की विवशताएँ आदि पर समीक्षात्मक अध्ययन इनसे संबंधित शोधों के निष्कर्ष एवं उनके निहितार्थ प्रवर्तित शैक्षिक एवं सामाजिक हस्तक्षेप यथा–छात्रवृतियॉ निःशुल्क गणवेश, मध्याहन भोजन आदि पाठयपुस्तकें समस्याएं एवं उनका व्यष्टि अध्ययन के आधार पर समाधान।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. कतिपय चयनित सामाजिक समस्याओं पर समूह परिचर्चा।
2. इकाई आधारित बिन्दूओं पर कृत शोधों के निष्कर्षो की समीक्षात्मक प्रस्तुति।
3. भारतीय समाज में सुविधावंचित संवर्ग (बालिकाओं की शिक्षा सहित) से संबधित विशेष समस्याओं का विश्लेषण एवं उनपर कार्यशाला आधारित समाधान निरूपण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय,के.पी.(2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी उ.प्र.
2. पाण्डेय,आर.एस.(1997) शिक्षा दर्शन,विनोद पुस्तक मन्दिर,आगराए उ.प्र.।
3. गैरोला, वाचस्पति (1997) भारतीय दर्शन,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद उ.प्र.।
4. शर्मा, चन्द्र धर (1990) भारतीय दर्शन आलोचना,वि.वि. प्र0 वाराणसी,उ.प्र.।
5. पाठक आर.पी.(2010) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्वान्त पियर्सन, एजुकेशन,नई दिल्ली।
6. पाठक,आर.पी.(2006) भारतीय समाज में शिक्षा, पियर्सन, एजुकेशन,नई दिल्ली।
7. शर्मा रामनाथ (1999) शैक्षिक समाजशास्त्र,अटलांटिक पब्लिशर्स,नई दिल्ली।
8. हार्न एच.एस.(1980) डेमोक्रेटिक फिलासाफी आफ एजूकेशन न्यूयार्क,मैकमिलन।
9. तनेजा,वी.आर (1973) एजूकेशनल थाट प्रैक्टिस,स्टर्लिग पब्लिशर्स,नई दिल्ली।
10. लाल,रमन बिहारी (2005) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर.लाल बुक डिपों मेरठ उ.प्र.।
11. शर्मा,डी.एस.(2010) शिक्षा तथा भारतीय समाज,आर.लाल बुक डिपो,मेरठ,उ.प्र.।
12. पाठक आर.पी.(2014) उदीयमान आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा,विकास पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली।
13. मिश्र,भास्कर (1998) शिक्षा संस्कृति नये सन्दर्भ में भावना प्रकाशन नई दिल्ली।
14. भण्डारी,आर.एवं विजय श्री (1990) भारतीय दार्शनिक चिन्तन न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन,नई दिल्ली।
15. V inoba Bhave Acharya Thoughts on Education Serva Seva Sangh Varansi (U.P.)

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–6 अध्यापक शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 222 | कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह | कुल अंक = 100

उद्देश्य :–

1. अध्यापक शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठीूमि से अवगत कराना।
2. भारत में अध्यापक शिक्षा के सम्प्रत्यय, उद्देश्य, क्षेत्र एवं प्रकारों का ज्ञान कराना।
3. भारत में अध्यापक शिक्षा के विकास का ज्ञान कराना।
4. शिक्षण कौशलों में प्रवीणता विकसित करना।
5. शिक्षण प्रतिमानों के सम्प्रत्यय एवं प्रक्रिया का अवबोध कराना।
6. अध्यापक के लिये प्रभावी अन्तःक्रिया के सम्बन्ध में आवश्यक विभिन्न दक्षताओं का विकास करना।
7. शिक्षण पर्यवीक्षण एवं प्रतिपुष्टि के विभिन्न पक्षों का ज्ञान कराना।
8. शिक्षक प्रशिक्षण से सम्बद्ध विभिन्न अभिकरणों व उनके कार्यो से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु **80 अंक**

इकाई – 1 – अध्यापकशिक्षा का सम्प्रत्यय

1. अध्यापकशिक्षा का अर्थ, परिभाषा तथा बदलते हुए सामाजिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षकप्रशिक्षण का स्वरूप (भारतीय एवं पाश्चात्य)।
2. अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता तथा इस क्षेत्र में विविध शिक्षा आयोगों द्वारा अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ की गयी संस्तुतियाँ।
3. अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य (विशेष कर भारतीय परिप्रेक्ष्य में)।
4. अध्यापन का अर्थ, स्वरूप, एवं परिभाषा उद्देश्य (बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में)।
5. कौशल का सम्प्रत्यय तथा कौशल विकास के स्त्रोत शिक्षण कौशल, प्रतिपुष्टि, शैक्षिक नवाचार तथा भाषा विकास कौशलों का प्रशिक्षण।

इकाई – 2 – अध्यापक शिक्षा के प्रकार, पाठ्यक्रम तथा अभिकरण

1. सेवापूर्ण तथा सेवारत अध्यापक शिक्षा का स्वरूप
2. विभिन्न स्तरों यथा – पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चस्तरों के अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम विश्लेषण।
3. दूरस्थशिक्षा के रूप में अध्यापक शिक्षा।
4. ओरियेन्टेशन और रिफ्रेशर कोर्स तथा पाठ्यक्रम निर्माण प्रक्रिया।
5. अध्यापक शिक्षा में विविध शैक्षिक अभिकरणों की भूमिका (विशेष कर राज्यस्तरीय, जिलास्तरीय, राष्ट्रस्तरीय)
6. भारतीय शिक्षा विकास में तत्कालीन शैक्षिक संस्थाओं, गुरुकुलों एवं संस्कृत टोलपाठशालाओं का योगदान।

इकाई – 3 – अध्यापक शिक्षा प्रशासन

1. अध्यापक शिक्षा / शैक्षिक विकास के आधुनिक सम्प्रत्यय।
2. शिक्षा प्रशासन 1900 से वर्तमान तक।
3. अध्यापक शिक्षा प्रवेश प्रक्रिया (वैदिक काल से वर्तमान तक)।
4. शैक्षिक प्रशासन एवं मानव संसाधन व मानव सम्बन्ध।
5. शैक्षिक प्रशासन एवं नेतृत्व विकास।

इकाई – 4 – शैक्षिक योजना तथा पर्यवेक्षण

1. शैक्षिक योजना एवं पर्यवेक्षण का अर्थ, आवश्यकता एवं उद्देश्य।
2. शैक्षिक योजना के उपागम।
3. संस्थायी योजना संख्यागत योजना तथा परिप्रेक्ष्य।
4. पर्यवीक्षण की प्रक्रिया तथा सेवा के रूप में इसका प्रयोग।

इकाई – 5 – शैक्षिक मूल्यांकन प्रणाली

1. मूल्यांकन का अर्थ, आवश्यकता एवं प्रक्रिया।
2. बिन्दु प्रणाली।
3. छः माही प्रणाली।
4. चयनाधारित आकलन प्रणाली।

5. विविध देशों में अध्यापक शिक्षा में प्रयुक्त मूल्यांकन प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन (विशेष कर भारत, यू.के. एवं यू.एस.ए.)

सत्रीय कार्य :– **20 अंक**

1. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के किसी एक विषय पर अनुसंधानपरक लेख 10 अंक
2. अध्यापक शिक्षणाभ्यास अथवा सूक्ष्म शिक्षण की समय तालिका का निर्माण 10 अंक

सन्दर्भग्रन्थसूची :–

1. हरबर्ट, जे.वर्न, प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।
2. मलैया, विद्यावती, शिक्षक प्रशिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. स्टिेनेट, टी.एम., अध्यापकवृत्ति, आत्माराम एवं सन्स, दिल्ली।
4. सिंह, डॉ. मया शंकर, (2007), अध्यापक शिक्षा–गुणात्मक विकास, अध्ययन पब्लिषर्स, सादतपुरा एक्सटेंशन्, न्यू दिल्ली।
5. सिंह, डॉ. मया शंकर, (2007), अध्यापक शिक्षा असंमजस में, अध्ययन पब्लिषर्स, सादतपुरा एक्सटेंशन्, न्यू दिल्ली।
6. सोनी, राम गोपाल, (2005), अध्यापक शिक्षा, राखी प्रकाशन, संजय पैलस, आगरा।
7. Venkataiah,S., (2001), Teacher Education, Anmol Publications pvt. Ltd., Darya ganj, New Delhi.
8. Verma, Mahesh, (2006), Teacher Education, Murarilal & sons, Darya Ganj, New Delhi.
9. Mohanthi, Jannath, (2003), Teacher Education, Deep & Deep Publications, New Delhi.
10. चौरासिया जी : न्यू एरा इन टीचर एज्यूकेशन, स्टर्लिग पब्लि. प्रा. लि. दिल्ली।
11. गुप्ता अरून के : टीचर एज्यूकेशन करेण्ट एण्ड प्रोस्पेक्टस स्अर्लिग पब्लि. प्रा. लि. दिल्ली।
12. हरवर्ट जे. वर्न : प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।
13. कौल एवं मेनन : एक्सपेरीमेट्स इन टीचर ट्रेनिंग मैनेजर पब्लि, नई दिल्ली।
14. मलैया विद्यावती : शिक्षक प्रशिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
15. मेहता चतरसिंह एवं जोशी दिनेशचन्द्र : शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धान्त एवं समस्यायें, राजर हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
16. पालीवाल एम.आर. : टीचर एज्यूकेशन ऑन द मूव उप्पल पब्लि. हाउस, नई दिल्ली।
17. रा.अ.शि. परिषद् प्रकाशन : पर्सपेक्टिव्स इन टीचर एज्यूकेशन, रा.अ.शि.परि. नई दिल्ली।
18. शर्मा एस.आर. : टीचर एज्यूकेशन इन इण्डिया, वाल्यूम I एवं II अनमोल पबिलकेशन्स दिल्ली।
19. स्टिनेट टी.एम. अध्यापन वृति, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
20. उदयशकर : एज्यूकेशन ऑफ इण्डियन टीचर्स, स्टर्लिग पब्लि. प्रा. लि. दिल्ली।

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–7 शैक्षिक शोध में प्रदत्त विश्लेषण एवं प्रतिवेदन

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 223 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- शैक्षिक शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण से संबन्धित से अपेक्षित कौशल विकास करना।
- शैक्षिक शोध में प्रदत्तों के विविध स्रोतों के निर्धारण करने की क्षमता का विकास करना
- प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी एवं गुणात्मक प्रविधियों के अनुप्रयोग में प्रवीणता विकसित करना।
- शोध प्रतिवदन कें लेखन के विभिन्न प्रकार यथा शोध प्रबन्ध, लघु शोध प्रबन्ध, शोध संगोष्ठी एवं शोध पत्रिकाओं के लिए निहित प्रारूपों से परिचय प्राप्त कराना एवं उनके लेखन नमें कुशलता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 शोध प्रदत्तों कें आधार पर विश्लेषण–अभिप्राय, व्यवस्थापन एवं वर्णनात्मक एवं अनुमानपरक विश्लेषण, मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं व्यवस्थापन मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोधो में प्रदत्त विश्लेषण कें भेदक लक्षण। आवृति वितरण तालिका निर्माण, बिन्दु रेखीय प्रदर्शन (वृतचित्र, दण्डाकृति, स्तम्भाकृति, आवृतिबहुभुज, संचयी आवृतिवक्र,एवं तोरण)। मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण के दृष्टान्त–कृत शोधों के माध्यम से।

इकाई–2 वर्णनात्मक सांख्यिकी विधियों विधियों द्वारा प्रदत्त विश्लेषण–केन्द्रवर्ती मान–मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक मान। विचलन मान–प्रसार, चतुर्थाक, विचलन एवं प्रमाणिक विचलन एवं विचलनशीलता गुमांक। स्थितिसूचन मान– प्रतिशंताक एवं प्रतिशतीय कमांक। सहसम्बन्ध गुणांक– स्पीयमैन का अनुस्थिति अन्तरविधि (Rank Difference Method) एवं पियर्सन का गुणन आघूर्णनिधि (Product Moment Method)– मूल प्राप्तांक विधि द्वारा। सामान्य सम्भाव्यता वक्र (NPC) अर्थ विशेषता एवं अनुप्रयोग।

इकाई–3 अनुमानपरक सांख्यिकीय विधियों द्वारा प्रदत्त विश्लेषण– अमुमान आधारित सांख्यिकीय प्रविधियां– प्राचलिक एवं अप्राचलिक–मानक त्रुटि का सम्प्रत्यय, दो समूहों के मध्य सार्थकता परीक्षण–टी परीक्षण (T.Sest), मध्यांक परीक्षण, (Median Test), चिन्ह परीक्षण (Sign Test), एवं मान व्हिटनी यू परीक्षण (Mann Whitney U Test) दो से अधिक समूहों के मध्य सार्थकता परीक्षण–एफ परीक्षण, (F.Test) मूल प्राप्तांक विधि द्वारा, कुस्कल वालिस एकमार्गी प्रसरण विश्लेषण (Kruskal Wallis One Way Analysis of Variance), कोई वर्ग परीक्षण (Chi&Square Test)– समान एवं स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना कें आधार पर परस्पर निर्भरता गुणांक। (Contingency Coefficient)।

इकाई–4 प्रदत्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना परीक्षण–परिकल्पना परीक्षण के सोपान–नकारात्मक या शून्य परिकल्पना निर्माण, सार्थकता स्तर का निर्धारण, सांख्यिकी परीक्षण का चयन एवं निरस्तता क्षेत्र का परिभाषीकरण। शून्य परिकल्पना के परीक्षण में त्रुटियाँ–प्रथम प्रकार (टाईप–1) एवं द्वितीय प्रकार (टाईप–2)। एक पुच्छीय या द्विपुच्छीय परीक्षण, नकारात्मक शून्य परिकल्पना कें आधार पर शोध परिकल्पना कें बारे में लिये जाने वाला निर्णय। गुणात्मक शोधों में प्रदत्त विश्लेषण–तार्किक विश्लेषण, साक्ष्य आधारित विश्लेषण, क्षेत्रीय टिप्पणी आधारित विश्लेषण एवं अभिलेख आधारित विश्लेषण।

इकाई–5 प्रतिवेदन प्रस्तुति– प्रतिवेदन के प्रकार–शोध प्रबन्ध, लघु शोध प्रबन्ध, शोध–पत्रिका आधारित प्रतिवेदन तथा शोध संगोष्ठियों के लिए निर्धारित प्रारूपों का विवरण। प्रतिवेदन लेखन–भाषा एवं शैली, मानक प्रारूप गत एवं परम्परागत निर्धारिकांए–प्रतिवेदन का आकार एवं कतिपय यान्त्रिक अवश्यकरणीयता (Imperative)

सत्रीय कार्यः **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोधों पर आधारित प्रकाशित शोध अभिलेखों का संक्षिप्तीकरण एवं प्रस्तुति।
2. प्रदत्त विश्लेषण आधारित अभ्यास–गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों शोधों के सन्दर्भ में।
3. शोध प्रतिवेदनों कें उदाहरण, उनका समीक्षात्मक अध्ययन एवं अनुवर्ती रूप में लघु अंशों कें लेखन कौशल पर केन्द्रित अभ्यास।

4. संगणक आधारित शोध विश्लेषण कें साफ्टवेयर से परिचय एवं अपेक्षित सावधानियों पर आधारित परिचर्चा।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय, के.पी, (1998) शैक्षिक अनुसन्धान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उ.प्र.।
2. त्रिपाठी, एल.बी.एवं भार्गव, (1998) मनौविज्ञानिक अनुसंधान प्रद्धति, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, उ.प्र.।
3. गुप्ता एस.पी., (1998) शिक्षा में सांख्यिकी,शारदा, पुस्तक भवन, इलाहाबाद, (उ.प्र.)।
4. पाण्डेय, के.पी. (1998) शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) ।
5. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय, (2012) शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी, कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।
6. शर्मा आर.ए. (2006) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी, आर.लाल बुक डिपो मेरठ, (उ.प्र.)।
7. शर्मा आर.ए. (2007) शिक्षा मापन कें मूल तत्व एवं सांख्यिकी, आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
8. Pandey, K.P (2005) Fundamentals of Education Research , Vishwavidyalaya Prkashan, Chowk, Varanasi (U.P)
9. Best John w, (2000) Research in Education, Prentice Hall, Inc, New Delhi
10. Kerlinger F-N, (2000) Foundations Of Behaviroal Research, Surdeet Publications, kamla Nagar, New Delhi.
11. Pathak, R.P. (2011) Statistics in Education & Psycholegy, Pearson Education, Knowledge Park, Noida.
12. Keeves, J.P. (1990) Educational Research Methodology and Measrement, International Handbook Pergamon Press. New York.
13. Pathak R.P. (2011) Research in Psychology and Education, Pearson Education New Delhi.
14. Guilford & Fruchter (1987) Fundamental Statistics in Psychology & Education MC Graw Hill, New Delhi.
15. Sidney and Seigal (1956) Non-Parametice Statistical McGraw Hill book Co. New Delhi.

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–8 (i) समावेशी शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 224 (i) — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- समावेशित शिक्षा के आधुनिकक परिप्रेक्ष्य को तर्काधार समझने की योग्यता विकसित करना ।
- शिक्षा में समावेशित शिक्षा की अवधारण का प्रबल आधार खोजने की संवेदनशीलता लाना।
- विशेष संवर्ग कें बच्चों की शिक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर शैक्षणिक हस्तक्षेपें एवं नवाचारी युक्यिों के अनुप्रयोग की कुशलता विकसित करना।
- राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट शिक्षा के सन्दर्भ में चलायें जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों तथा विकलांगता को दूर कारने हेतु सूचना प्रोद्योगिकी के योगदान से अवगत कराना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई–1 विशिष्ट शिक्षा– अवधारणा, उद्देश्य प्रकार महत्त्व एवं क्षेत्र। विकलांग बालकों की शिक्षा का विकास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) संशोधित प्रारूप (1992) विकलांगता अधिनियम (1995), शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) समावेसित शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में निहितार्थ शारीरिक रूप में विकलांग–दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, मन्दबुद्धि, अस्थिविकलांग और अधिगम अक्षमता पहचान सूची, शिक्षण विधियां विकलांग कें सन्दर्भ में मानव अधिकार।

इकाई–2 शैक्षिक इन्टरवेन्शन– एकीकरण की प्रकिया, विकलांगता के अनुसार कार्यात्मक योग्यताओं का आकलन। विकलांगता एवं सहायक सेवाएं संस्थान कक्ष।

इकाई–3 पाठ्यक्रम अनुशीलन– अवधारणा, विकलांगता कें सन्दर्भ में पाठ्यकम अनुशीलन, पाठ्यसहगामी कियाएं एवं संचालन। विकलांगता एवं नवाचार– अधिगम प्लस उपागम, सहभागिता शिक्षण तथा समन्वयस्क शिक्षण।

इकाई–4 समावेशी शिक्षा– अवधारणा उद्देश्य, तत्त्व, महत्त्व, कक्षा शिक्षण विवियां, समावेशित विद्यालय प्रतिमान, समावेशित शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान।

इकाई–5 विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु संस्थाओं का योगदान–राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका, विकलांगता और भारतीय पुनर्वास परिषद की भूमिका एवं विकलांगता को कम करने के लिए सूचना–प्रोद्योगिकी का योगदान ।

सत्रीय कार्य: — **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोइ दो

1. सुविधावंचित संबर्ग कें किन्ही चयनित दो से तीन छात्रों का व्यष्टि अध्ययन करना।
2. समावेशित शिक्षा की चुनौतियों पर आधारित समूह परिचर्चा करना।
3. समावेशित शिक्षा के कृत शोधों का सार संक्षेप निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. शर्मा आर.ए. (2005) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप लायल बुक डिपो मेरठ, (उ.प्र.)।
2. विष्ट आभा रानी, (1992) विशिष्ट बालक का मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद मन्दिर, आगरा, (उ.प्र.)।
3. सिंह बी.बी, (1990) विशिष्ट शिक्षा वैशाली प्रकाशन, गोरखपुर उ.प्र.।
4. Gary Thomas And Mark Vaughan, (2004) Inclusive Education-Reading And Reflections' Bletchley; Open University Press, paper Book And 18.99pp 215
5. Panda K.G (224) Managing Behaviour Problems in child. Vikas Publishing House Private Ltd. New Delhi.

6. Peshwaria R, (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas Publishing House Private Ltd New Delhi.
7. India Vision , The Report of Committee Of India, Planning Commission 2020 Govt. G, India Published Academic Foundation, New Delhi.
8. Thomas G, (1990) Inclusive Schools for An Inclusive Society, British Journal of Special Education
9. Stainback S. and Stain back w,(1990) Inclusive Education Baltimore, Brokers, Publishing Company

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–8 (ii) निर्देशन एवं उपबोधन

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 224 (ii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- भारतीय संदर्भ में निर्देशन एवं उपबोधन की परिस्थितियों में प्रेक्षित समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
- निर्देशन की व्यावहारिक परिस्थितियों में गुणवता लाने हेतु कुशलता का विकास कराना।
- उपबोधन की परिस्थितियों को सुविधावंचित संवर्ग की समस्याओं के आधार पर व्यवस्थित करने की प्रवीणता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई – 1 निर्देशन – निर्देशन की मूलभूत अवधारणा (ऐतिहासिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में) उद्देश्य, आवश्यकता, सिद्वान्त, प्रकार और निर्देशक के रूप में अध्यापक की भूमिका शैक्षिक निर्देशन–अवधारणा, उद्देश्य आवश्यकता, शैक्षिक निर्देशन के सिद्वान्त, प्रक्रिया एवं उसका कार्यक्षेत्र, विभिन्न शैक्षिक स्तर–प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर स्तर।

इकाई – 2 व्यावसायिक निर्देशन – व्यावसायिक निर्देशन की अवधारणा, उद्देश्य,आवश्यकता प्रक्रिया एवं कार्यविधि, व्यवसाय चयन एवं उसके सिद्वान्त शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में सम्बन्ध।

इकाई – 3 उपबोधन – उपबोधन की अवधारणा, उपबोधन एवं निर्देशन में अन्तर, उपबोधन प्रक्रिया के मूलभूत सिद्वान्त, उपबोधन के प्रकार–निदेशात्मक, अनिदेशात्मक और संकल्पनात्मक (अर्थ, सोपान और इनकी सीमाएँ) अच्छे उपबोधक के गुण।

इकाई – 4 निर्देशन एवं उपबोधन में साक्षात्कार विधि – अवधारणा, उद्देश्य, प्रकार, सोपान, सिद्वान्त, लाभ, सीमाएँ (इनके महत्व, कार्य विधि और सीमाएँ)

इकाई – 5 निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त विविध परीक्षण – बुद्विपरीक्षण, रूचि परीक्षण, अभिरूचि परीक्षण, उपलब्धि, परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, परीक्षणेतर उपबोधन एवं निर्देशन हेतु उपकरण एवं युक्तियाँ।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. भारतीय संदर्भ में अंचल आधारित वृत्तिक सर्वेक्षणों का सारांश संग्रह करना।
2. शैक्षणिक निर्देशन के संदर्भ में अधिगम अक्षम बालकों पर आधारित व्यष्टि अध्ययन
3. किन्हीं दो या तीन सुविद्यावंचित संवर्ग के बालको के उपबोधन के कार्यक्रमों में प्रतिभाग।
4. प्रभावी निर्देशन एवं उपबोधन सुनिश्चित करने हेतु परीक्षणों एवं परीक्षणेत्तर उपकरणों का चयन एवं उनका व्यवहारिक परिस्थितियों में अनुप्रयोग।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. ओबराय,एस.सी.(2005) शैक्षिक तथा व्यासायिक निर्देशन एवं परामर्श,इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ (मेरठ) उ.प्र.।
2. दुग्गल एस.सी.(2005) निर्देशन एवं परामर्श अर्णव बुक हाउस,मेरठ उ.प्र.।
3. योगेन्द्रजीत भाई (1995)शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा,उ.प्र.।
4. जायसवाल,सीताराम(1998) शिक्षा निर्देशन और परामर्श,हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,लखनऊ उ.प्र.।
5. पाठक,आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय(2012) पाठ्यचर्चा,निर्देशन एवं तुलनात्मक शिक्षा का आधार कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।
6. शर्मा,आर.ए.(2002) निर्देशन एवं परामर्श के मूल,आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
7. भटनागर,आर.पी. एवं जौहरी मन्जू(2005) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में निर्देशन और परामर्श आर.लाल. बुक डिपो,मेरठ.उ.प्र.।
8. शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदी शिखा(2007) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श के मूल आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.।
9. दूबे,रमाकांत (1979) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के मूल सिद्वान्त राजेश पब्लिशिंग हाउस,मेरठ उ.प्र.।
10. पाण्डेय के.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2003) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ.प्र.।

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–8 (iii) तुलनात्मक शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 224 (iii) — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- भारतीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में विभिन्न देशों की शिक्षा प्रणालियों के सापेक्ष प्रेक्षित शैक्षिक संरचनाओं समस्याओं एवं नवाचारी कार्यक्रमों के प्रतिसंवेदनशीलता विकसित करना।
- भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्रयुक्त संरचनात्मक हस्तक्षेपों के प्रभावों का समीक्षात्मक विश्लेषण करना।
- भारतीय शिक्षा की समस्याओं का प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने हेतु आपेक्षित समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई– 1. तुलनात्मक शिक्षा– आवधारणा– एक नवीन विषय के रूप में, आवश्यकता, विधियॉं, क्षेत्र, बाह्म–अन्त, शैक्षिक विश्लेषण लोकतंत्र एवं राष्ट्रीयता की अवधारणा के आलोक में विभिन्न देशों की शिक्षा–प्रणालियॉं तुलनात्मक शिक्षा के कारण एवं उपागम– भौगिलिक,आथिक,सांस्कृतिक, समाजशास्त्रीय,दार्शनिक,भाषा,वैज्ञानिक,ऐतिहासिक,पारिस्थितिक, संरचनात्मक एवं कार्यत्मक।

इकाई–2 विभिन्न देशों की शिक्षा पद्वति का तुलनात्मक अध्ययन– प्राथमिक,माध्यमिक,उच्च एवं शिक्षक शिक्षा–अमेरिका,ब्रिटेन,आस्ट्रेलिया एवं भारत के सन्दर्भ में – स्वरूप, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम।

इकाई–3 विश्वशिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियॉं – राष्ट्रीय एवं वैश्विक विभिन्न देशीय लोगों के शैक्षिक समुन्नयन में संयुक्त राष्ट्रसंघ की भूमिका। विकासशील देशों का अध्ययन (विशेषतया भारत में सन्दर्भ में) समस्याओं उनके कारक एवं शैक्षिक समाधान।

इकाई–4 शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन (ब्रिटेन,अमेरिका,आस्ट्रेलिया एवं भारत के सन्दर्भ में) परीक्षा प्रणाली,शैक्षिक प्रबन्धन प्रणाली,मूल्यपरक शिक्षा,व्यवसायिक शिक्षा एवं दूरवर्ती शिक्षा।

इकाई–5 तुलनात्मक शिक्षा की भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता– अमेरिका, ब्रिटेन तथा आस्ट्रेलिया की शिक्षा व्यवस्था की विशेषतायें भारतीय शिक्षा व्यवस्था में उनके समावेश की संभावनायें।

सत्रीय कार्य – — **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. भारतीय शिक्षा में शिक्षण–अधिगम,परीक्षा,मूल्यांकन,कार्यक्रम निर्धारण,शिक्षक–छात्र सम्बन्ध आदि में से चयनित किन्ही दो बिन्दूओं पर समीक्षात्मक लेख पस्तुत करना।
2. अमेरिका,ब्रिटेन तथा आस्टेलिया की शिक्षा व्यवस्था में संर्दभित मुख्य समस्याओं का तुलनात्मक विश्लेषण परिचर्चा के माध्यम से।
3. कतिपय चयनित शैक्षिक मुद्दों पर सुधार हेतु विचारावेश सत्र आयोजित करना।
4. अमेरिका,ब्रिटेन,भारत तथा आस्टेलिया की शिक्षा पद्वति के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित दत्त कार्य।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय के.पी.(1995) तुलनात्मक शिक्षा,विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी, उ.प्र.।
2. चौबे सरयूप्रसाद (1994) तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा,उ.प्र.।
3. जायसवाल,सीताराम,(1990) तुलनात्मक शिक्षा, हिन्दी समिति सूचना विभाग,उ.प्र.।?
4. पाठक,आर.पी. एवं भारद्वाज,अमिता पाण्डेय(2012) पाठ्यचर्चा निर्देशन एवं तुलनात्मक शिक्षा का आधार,कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।

5- Pathak R.P.(2006) Global Trends & Development of Education in Modern India Atlantic Publishers New Delhi.

6- Pathak R.P.(2009) Education in Emrging India Atlantic Publishers& Distributours New Delhi.

शिक्षाचार्य – द्वितीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–8 (iv) भाषा शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 224 (iv) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- भाषा शिक्षण एवं अधिगम की परिस्थितियों की अधिगमकर्त्ता की आवश्यकता के अनुरूप अभिकल्पित करने की दक्षता विकसित करना।
- भाषा शिक्षण के विशेषज्ञ प्रशिक्षकों को तैयार करना।
- भाषा की प्रकृति एवं अधिगमकर्त्ता की आवश्यकता के सापेक्ष संगति बनाने वाली युक्तियों का विशेषज्ञ प्रशिक्षक बनाना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई– 1. भाषा – भाषाशिक्षण,योजना,प्रकृति,कार्य और निहितार्थ,भाषा विज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे भाषा की प्रकृति कार्य विश्लेषण रचना। ध्वनिविज्ञान,पदविज्ञान एवं वाक्यविज्ञान प्रमुख सिद्वान्त एवं शिक्षण हेतु अपेक्षित सावधानियॉं। भाषाशिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान – भारतीय परम्पराः यास्क पाणिनि, पतंजलि एवं भर्तृहरि का योगदान। पाश्चात्यपरम्पराः व्यवहारवादी उपागम, संज्ञानात्मक उपागम, संप्रेषणात्मक उपागम। मनोभाषिक उपागमः भाषाशिक्षण अधिगम के मनोविज्ञान का सिद्वान्त।

इकाई – 2 भाषाशिक्षण और अधिगम का शिक्षाशास्त्र– भाषाशिक्षण प्रथमभाषा एवं द्वितीयभाषा – उद्देश्य संरचना, सामग्रीनिर्माण ,मूल्यांकन,प्रभावित करने वाले कारक। भाषा पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रय विकासः आयाम, प्रभावित करने वाले कारकः,मूल्यांकन। प्राथमिक,माध्यमिक एवं उच्चस्तर भाषायी कौशलो का विकास भाषा अधिगम में वैयक्तिकरण–आवश्यकत,प्रविधियां, कक्षागतकार्य और सत्रीयकार्य।

इकाई–3 **भाषाशिक्षण में अनुसंधान–** पठन एवं लेखन अनुसंधान,निर्देशन ओर प्राथमिकतायें। सन्दर्भगत समस्यायें 'भारत का बहुभाषीय सन्दर्भ' सवैधानिक प्रावधान– त्रिभाषासूत्र,राष्ट्रीय शिक्षानीति 1968,1986,1992 और राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यचर्या 2005 की संस्तुतियॉं।

इकाई –4 **पाठ्यचर्याविकास' भारत के बहुभाषीय सन्दर्भ में' केन्द्रिकतत्व प्रविधियॉं, मूल्यांकन।**

भाषा अध्यापकों को तैयार करनाः पूर्वसेवाशिक्षा,सेवारत शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास। भाषाशिक्षण भाषासाक्षरता प्रकृति,अन्तर,अन्तः सम्बन्ध,शिक्षण और मूल्यांकन की प्रविधियां। आवश्यकता आधारित पठन व लेखन कार्यक्रम भाषाशिक्षा में सृजनात्मकता और इसको विकसित करने की प्रविधियां।

इकाई –5 भाषा विज्ञान में संलग्न विभिन्न संस्थाओ की भूमिका – भाषा विकास में संलग्न संस्थाएं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,नई दिल्ली, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नई दिल्ली, केन्द्रीय भाषा संस्थान मैसूर,इंगलिश एवं विदेश भाषा विश्वविद्यालय हैदराबाद। भाषा शिक्षानीति के कार्यान्वयन में आगत समस्यायें एवं उनके समाधान के उपाय–राष्ट्रीय,राज्य,जनपद एवं स्थानीय स्तर पर।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. भाषायी कौशलों को अधिगमकत्ताओं की आवकताओं के अनुरूप विकसित करने हेतु भाषा प्रयोगशाला आधारित अभ्यास कराना।
2. भाषा शिक्षण में गुणवत्ता के आयाम को विकसित करने हेतु परिचर्या आयोजित करना।
3. प्रभावी भाषा कौशल विकास की विशिष्ट अभ्यासमालायें अभिकल्पित करना एतदर्थ – उच्चारण, वाचन,लेखन अथवा परीक्षण से संबंधित अभ्यास हेतु किन्ही दो का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. द्विवेदी,कपिल देव (2003) भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,उ.प्र.।
2. तिवारी, भोलानाथ, (2002) भाषा विज्ञान,किताब महल,इलाहाबाइ,उ.प्र.।
3. पाठक, आर.पी.(2010) भाषा शिक्षण कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।
4. पाठक आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय(2012) शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी,कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,1992 का प्रतिवेदन, भारत सरकार नई दिल्ली।
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,2009 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
7. वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, (राजभाषा प्रभाग) नई दिल्ली।

शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम
तृतीय सेमेस्टर

शिक्षाचार्य – तृतीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–9 संस्कृत शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 241 कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- संस्कृत शिक्षा क्षेत्र के विषय में पूर्णरूप से अवबोध कराना।
- संस्कृत शिक्षा के विकास, समस्याओं का अवबोध कराला।
- संस्कृत शिक्षा में अनुसन्धान हेतु क्षेत्रों से परिचित कराना।
- संस्कृत शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं की भूमिकाओं से अवगत कराना।
- संस्कृत शिक्षा में नूतन प्रवृत्तियों से अवगत कराना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 संस्कृत शिक्षा का विकास–पारम्परिक संस्कृत शिक्षा, सम्प्रत्यय, उद्देश्य, पाठ्यचर्चा, विधियां मूल्यांकन, गुण, दोष।

इकाई–2 संस्कृत शिक्षा में अनुसन्धान क्षेत्र–वर्णनात्मक प्रायोगिक एवं ऐतिहासिक, दार्शनिक, क्रियात्मक अनुसंधान विधियाँ। संस्कृतशिक्षण की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान। शिक्षणविधियों पर आधारित अनुसंधान। संस्कृत अधिगम पर आधारित अनुसंधान। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों पर आधारित अनुसंधान।

इकाई–3 संस्कृत शिक्षा का संवर्धन– संस्कृत अधिगम के लिये अनुदेशनात्मक सामग्री का निर्माण। संस्कृत सम्भाषण शिविर आयोजन एवं प्रविधि। संस्कृत प्रशिक्षणवर्ग का आयोजन तथा दायित्व। संस्कृतभाषा सम्बद्ध प्रदर्शिनी। संस्कृतसम्बद्ध संगोष्टी/सम्मेलन का आयोजन।

इकाई–4 संस्कृत शिक्षा से जुडी संस्थाएं– संस्कृत पाठशाला, गुरूकुल एवं अभिनव प्रयोग। संस्कृत परीक्षा मण्डल/समिकत। संस्कृत संवर्धन। संस्कृत विश्वविद्यालय। संस्कृत शोध संस्थाऐं – संस्कृत अकादमी सरकारी संस्थाएं, गैर–सरकारी संस्थाएं एवं स्वयं सेवी संस्थाएं।

इकाई–5 संस्कृत शिक्षा में नूतन प्रवृत्तियॉ– संस्कृत शिक्षा में ई–अधिगम, संगणकाधारित संस्कृतशिक्षण, दूरस्थाशिक्षा के माध्यम से संस्कृत अध्ययन, पत्राचार से संस्कृत शिक्षा, संस्कृतशिक्षा में स्वाध्याय सामग्री (Kit)

सत्रीय कार्य **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोइ दो

1. संस्कृतभाषाधारित सामग्री का निर्माण।
2. संस्कृत विकास विषय सम्बन्धित PPT
3. संस्कृत क्षेत्र में साहित्यसेवी सम्मान/पुरस्कार सम्बन्धित विवरणों का संकलन।
4. किसी एक संस्कृतपाठ पुस्तक की समीक्षा।
5. अपने–अपने राज्यानुसार संस्कृत संस्थाओं का व्यष्टिवृत अध्ययन।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय, के.पी. (1998) शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, उ.प्र.।
2. त्रिपाठी, एल.बी एवं भार्गव, हरप्रसाद मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान पद्धति, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. गुप्ता एस.पी., (1998) अनुसन्धान संदर्शिका ,शारदा, पुस्तक भवन, इलाहाबाद, (उ.प्र.)।
4. Pandey, K.P (2005) Fundamentals of Education Research , Vishwavidyalaya Prkashan, Chowk, Varanasi (U.P)
5. Best John w, (2000) Research in Education, Prentice Hall, Inc, New Delhi
6. Kerlinger, w, (2000) Foundations of Bheavioural Research, Surjeet Publicaions, Kamla Nagar New Delhi.
7. Keeves, J.P. Educational Research Methodology and Measrement, International Handbook Pergamon Press. New York.
8. Pathak R.P. Research in Psychology and Education, Pearson Education New Delhi.

शिक्षाचार्य – तृतीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–10 (i) प्रारम्भिक शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 242 (i) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- प्रारम्भिक स्तर पर विद्यालयों के प्रभावपूर्ण नियोजन एवं संचालन की दक्षता विकसित करना।
- समान स्तरीय संस्थाओं के साथ प्रारम्भिक शिक्षा के बीच सम्बन्धों के सम्प्रत्ययात्मक अवबोध का विस्तार करना।
- आवश्यकता आधारित पाठ्यक्रम एवं अनुदेशानात्मक रणनीतियों के अभिकल्प हेतु कौशलों का विकास करना।
- प्रारम्भिक स्तर के कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये नवाचारी कौशलों को प्रोत्साहित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई 1. प्रारम्भिक शिक्षा स्तर की संरचना – हमारे अधिगमकर्त्ता कौन है? उनकी सामाजिक– सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा प्रभावी शिक्षण अधिगम के आयोजन तथा प्रारम्भिक आवश्यकता आधारित शिक्षा कार्यक्रमों के विकास हेतु निहितार्थ।

इकाई 2 प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर क्या पढ़ायें? – प्राथमिक तथा प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों के लिए आवश्यकता आधारित कार्य तथा एन.सी.एफ. 2005 के तहत निर्मित पाठ्यक्रम प्रारम्भिक स्तर के विषय क्षेत्र में सम्मिलित पाठ्यवस्तु की समीक्षा।

इकाई 3 अधिगम उन्नयन एवं शिक्षण कैसे करें? – प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षण अधिगम के रचनात्मक उपागम, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष शिक्षण अधिगम रणनीतियॉ और उनका विद्यालय की आन्तरिक तथा वाह्य अधिगम परिस्थितियों में अधिगमकर्त्ता द्वारा कार्य की शुरूआत करने की क्षमता का उन्नयन तथा उनका निहितार्थ।

इकाइ 4 प्रारम्भिक स्तर पर अधिगम संसाधन– अधिगम संसाधनों का विकास समुदाय आधारित संसाधनो के अधिगम उपकरण,स्थान विशेष आधारित अधिगम सामग्री का विकास, अधिगम किट,अधिकम क्लब।

इकाई 5 अभिकरण एवं मध्यस्थता – भारत में शिक्षा स्तरीय नीतियों तथा कार्यक्रमों मे क्रियान्वयन में सम्मिलित औपचारिक तथा अनौपचारिक अभिकरण। समाज के विभिन्न वगो में प्रेक्षित विंसंगतियों के सुधार हेतु प्रयोग में लाये गये कुछ महत्वपूर्ण मध्यस्थता कार्यक्रम कुछ महत्वपूर्ण मध्यस्थता कार्यक्रमों की समीक्षा यथा सर्वशिक्षा अभियान, मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम, निशुल्क बालिका शिक्षा।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1- प्रारम्भिक शिक्षा स्तर की वरीयताओं तथा कार्यक्रम में सुधार हेतु कार्य योजना का विकास।
2- प्रारम्भिक स्तर की चयनित संस्थाओं का व्यष्टि अध्ययन करना।
3- प्रारम्भिक स्तर की शीर्ष स्तरीय संस्थाओं का भ्रमण तथा संस्थागत पार्श्वचित्र का निर्माण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –ा

1. लाल,रमण बिहारी एवं शर्मा, कृष्णकान्त (2010) भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्याएं आर.लाल. बुक डिपों मेरठ उ.प्र.।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,1992 का प्रतिवेदन, भारत सरकार नई दिल्ली।
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,2009 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
4. पाठक,आर.पी.(2012) आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं समाधान,कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।
5. भटनागर,सुरेश (2005) आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं समाधान,आर.लाल बुक डिपो,नई दिल्ली।
6. Bhat, B.D. & Sharma S.R.(1992) Principles of Curriculum Construcation Kanishka Publication House. New Delhi.
7. Mamidi.M.R.& Ravishankar S (1984) Curriculum Development & Educational Technology Sterling Publihers, New Delhi.
8. भारतीय संविधान, अनुच्छेद 45
9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय का प्रतिवेदन – UEE

शिक्षाचार्य – तृतीय सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–10 (ii) माध्यमिक शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 242 (ii) — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- माध्यमिक स्तर की संस्थाओं के मुद्दों एवं चुनौतियों को हल करने हेतु विशेषज्ञ अध्यापकों का निर्माण करना।
- माध्यमिक स्तर की संस्थाओं द्वारा संचालित मध्यस्थता कार्यक्रमों के प्रभावकारी क्रियान्वयन हेतु दक्षता विकसित करना।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्ता हेतु संवेदनशीलता विकसित करना।
- माध्यमिक स्तर पर नवाचारी प्रवृति तथा मानसिकता युक्त अध्यापकों को तैयार करना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई 1. भारत में माध्यमिक शिक्षा का स्थान तथा कार्य, अन्य स्तरीय शिक्षा के संदर्भ में महत्व –माध्यमिक शिक्षा स्तर के संदर्भ में नीति निर्धारक संस्थायें माध्यमिक स्तरीय शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न आयोगों तथा समितियों की संस्तुतियों के परिणामों का संक्षिप्त पुनरावलोकन, उनका क्रियान्वयन तथा आवश्यकता आधारित परिवर्तन हेतु परिप्रेक्ष्य।

इकाई 2. माध्यमिक स्तरीय शिक्षा में हमारा विद्यार्थी,उनकी आवश्यकताएँ तथा आकांशाएँ माध्यमिक स्तरीय शिक्षा में परिर्वतन हेतु कार्य संस्कृति,उदीयमान परिदृश्य,माध्यमिक शिक्षा के लिये उत्तरदायी औपचारिक तथा अनौपचारिक अभिकरण 21 वीं सदी में उदीयमान सामाजिक– सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के विस्तृत संदर्भ में माध्यमिक शिक्षा की भूमिका तथा कार्यो की समीक्षा।

इकाई 3. विषयवस्तु तथा प्रक्रिया – माध्यमिक स्तर पर पाठयक्रम क्रियान्वयन हेतु रणनीतियॉ,माध्यमिक शिक्षा में पाठ्यक्रम की संरचना को पुनः संरचित करने में एन.सी.एफ. 2005 के निहितार्थो का प्रयोग। विषय केन्द्रित बनाम अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम उपागम, अधिगम क्षेत्र तथा पाठ्यक्रम अभिकल्प निर्माण में रचनावादी उपागम के निहितार्थ।

इकाई 4. क्रियान्वयन हेतु रणनीतियॉ– शैक्षिक रचनावादी उपागम के अन्तर्गत नये शैक्षिक प्रतिमानों का प्रयोग अप्रत्यक्ष शिक्षण अधिगम रणनीतियॉ,अधिगमकर्त्ता के पहल का उन्नयन सृजनात्मक तथा खोजपरक अधिगम प्रविधियों को प्रोत्साहन,स्थानीय ज्ञान तथा कौशल को विकसित करने हेतु समुदाय आधारित कार्यक्रम,माध्यमिक स्तर पर सुस्थित जीवन शैली कार्यक्रमों में सहभागिमा हेतु नौजवानों को अवसर प्रदान करना।

इकाई 5. माध्यमिक स्तर पर सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग में शिक्षण अधिगम संसाधन तथा समीक्षात्मक अवबोध–सूचना सम्प्रेषण तकनीकी द्वारा संचालित अधिगम केन्द्र तथा अधिगम हब अधिगमकर्त्ता द्वारा पोर्टफोलियों का विकास तथा अधिगम के अन्नयन के लिये प्रयास, बदलते हुए मूल्यांकन प्रतिमान तथा प्रारूप सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो मूल्यांकन आत्म मूल्यांकन,सांथियों द्वारा मूल्यांकन अध्यापक मूल्यांकन तथा समुदाय आधारित मूल्यांकन,माध्यमिक स्तर पर सम्पूर्ण गुणवता प्रबन्धन रणनीतिक नियोजन,स्वाट विश्लेषण तथा प्रभावशीलता हेतु जोहारी विन्डो का प्रयोग। आवश्यकता आधारित नेतृत्व शैली। क्रियान्वयन बनाम रूपान्तरण,नेतृत्व शैली,गुणवता सुनिश्चित करने हेतु प्रयोगपूर्ण परिस्थितिजन्य नेतृत्व शैली का विकास।

सत्रीय कार्य – — **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. विभिन्न संगठनों यथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् सी.बी.एस.ई. तथा विभिन्न शैक्षिणिक परिषदों द्वारा सहायित किसी विशिष्ट माध्यमिक स्तरीय संस्था का व्यष्टि अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तरीय संस्था की शक्तियों तथा कमियों को उजागर करने हेतु स्वाट विश्लेषण।
3. प्रभावपूर्ण माध्यमिक स्तरीय संस्था की केस फाइल निर्माण तथा नवाचारी संस्थाओं के भ्रमण पर आधारित प्रतिवेदन बनाना।
4. माध्यमिक स्तरीय संस्था में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभावी क्रियान्वयन पर क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. लाल,रमण बिहारी एवं शर्मा, कृष्णकान्त (2006) 21 वीं शताब्दी के सन्दर्भ में भारत में माध्यमिक शिक्षा, आर.लाल बुक डिपो. मेरठ उ.प्र.।
2. रानी,नीलम एवं शर्मा दीपक (2006) भारत में माध्यमिक शिक्षा का परिदृश्य, आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
3. लाल,रमण बिहारी (2002) भारत में माध्यमिक शिक्षा, आर.लाल बुक डिपो. मेरठ उ.प्र.।
4. शर्मा, आर.ए.(1995) सूचना सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीकी ,आर लाल बुक डिपों मेरठ उ.प्र.।
5. भटनागर,सुरेश एवं कुमार संजय (2010) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.।
6. पाठक, आर.पी. (2012) आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं समाधान, कनिस्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. रा. मा. शि. अभियान (रमसा) प्रतिवेदन।
8. मुदालियर आयोग के प्रतिवेदन।
9. कोटारी आयोग का प्रतिवेदन।
10. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,2009 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
11. Bhat, B.D. & Sharma S.R.(1992) Principles of Curriculum Construcation Kanishka Publication House. New Delhi.

संस्था सम्बद्धता

(Instution Attachment)

कोर्स कोड – 243 | **कुल क्रेडिटस – 08**

कुल अंक – 200

कोर्स कोड	कोर्स का नाम	अवधि	अंक
243 - i	संस्था सम्बद्धता अध्यापक शिक्षा संस्थागत सम्बद्धता (Teacher Education Institutional Attachment)	4 Weeks	100
243 - ii	संस्था सम्बद्धता विशेषज्ञता आधारित संस्थागत सम्बद्धता (Specialization based Institutional Attachment)	4 Weeks	100

दोनो संस्थागत सम्बद्धता हेतु पाठ्यक्रमीय क्रियाएँ

(100 अंक/संस्था सम्बद्धता)

क्र.सं.	पाठ्यक्रमीय क्रियायें	अंक
(i)	सम्बद्ध संस्था से सम्बन्धित अनुभवों का अभिलेख निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण प्रति सप्ताह	20 (5+5+5)
(ii)	सम्बद्ध संस्था का कार्यालयीय अभिलेख प्रारूपन	20
(iii)	सम्बद्ध संस्था की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों पर आधारित प्रतिवेदन। लेखन एवं प्रस्तुति।	20 (15+5)
(iv)	सम्बद्ध संस्था के प्रशासनिक ढाँचे एवं कार्य प्रणाली पर प्रतिवेदन एवं प्रस्तुति।	20 (15+5)
(v)	सम्बद्ध संस्था के अनुभवों पर आधारित विमर्शी प्रतिवेदन एवं प्रस्तुति।	20 (15+5)

शिक्षाचार्य (एम.एड.) पाठ्यक्रम
चतुर्थ सेमेस्टर

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 क (i) प्रारम्भिक शिक्षा में पाठ्यक्रम विकास

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 क (i) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- पाठ्यक्रम के आधारभूत तत्त्वों एवं सिद्धान्तों से अवगत करना।
- पाठ्यक्रम विकास की चार अवस्थाओं यथा नियोजन, निर्माण क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन से अवगत कराना।
- प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा के किसी विषय पर पाठ्यक्रम निर्माण करने की दक्षताा विकसति करना।
- प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा में प्रयुक्त पाठ्यक्रमों का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिप्रेक्ष्य की अपेक्षाओं के अनुरूप मूल्यांकन करने की दक्षता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 पाठ्यक्रम एवं उसके आधार –पाठ्यक्रम अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत घटक, सिद्धान्त एवं प्रकार। प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा हेतु प्रयुक्त प्रकार। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिप्रेक्ष्य (NCF)– 2005 एवं प्रारम्भिक शिक्षा। पाठ्यक्रम कें आधार–दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक।

इकाई–2 पाठ्यकक्रम नियोजन –अभिप्राय, नियोजन के आधारभूत बिन्दु– विषय की प्रकृति, सामाजिक कारक, विकासात्मक कारक, शिक्षक सम्बन्धित कारक, संस्थागत कारक, पर्यावरणीय एवं अर्थशास्त्रीय कारक, प्रारम्भिक शिक्षा कें स्तर के पाठ्यक्रम नियोजन के मुख्य कारक।

इकाई–3 पाठ्यक्रम निर्माण प्रकिया – अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निरूपण, विषयवस्तु निर्धारण, विषयवस्तु के सापेक्षित भार का विशिष्टीकरण, शिक्षण अधिगम व्यूह रचनाओं का चयन, सन्दर्भ ग्रन्थ सामग्रियों का चयन तथा मूल्यांकन प्रक्रिया का विशिष्टीकरण। प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा से सम्बन्धित किसी पाठ्यक्रम निर्माण पर आधारित दृष्टान्तीकरण।

इकाई– 4 पाठ्यक्रम विकास के प्रतिमान एवं कियांन्वयन –चयनित प्रतिमान (टाइलर प्रतिमान, ताबा प्रतिमान, सेलर और अलेक्जैन्डर, मिलर और सेलर प्रतिमान, रौजर्स प्रतिमान, ओपन क्लासरूप प्रतिमान) पाठ्यक्रम कियांन्वयन–विषयवस्तु विश्लेषण, इकाई अभिकल्पन और उपयुक्त पुस्तुतीकरण माध्यम।

इकाई–5 पाठ्यक्रम मूल्यांकन (प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के सन्दर्भ में) – अवधारणा सूक्ष्म एवं बृहद स्तर, विधियॉ संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में पाठ्यक्रम मूल्यांकन मानक एवं निष्कष संदर्भित उपागम आधारित पाठ्यक्रम मूल्यांकनं। केन्द्रीय एवं राजकीय बोर्ड की प्रारम्भिक स्तर के पाठ्यक्रमों की तुलनात्मक समीक्षा।

सत्रीय कार्य– **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो –

1. प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के किसी एक विषय के उप–विषयों पर सापेक्षित भार के विशिष्टीकरण पर आधारित दत्त कार्य।
2. प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय के पाठ्यक्रम की समीक्षा पर आधारित दत्त कार्य।
3. प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय पर पाठ्यक्रम निर्माण।
4. विभिन्न शिक्षा बोर्ड के प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के किसी कक्षा के पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाल, हंसराज एवं पाल, राजेन्द्र, (2006) पाठ्यचर्या कल आज और कल, शिप्रा पब्लिकेशन, विकास मार्ग, दिल्ली।
2. यादव सियाराम, (2008) पाठ्यक्रम विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
3. पाण्डेय, के.पी. (2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. गुप्ता, एस.सी (2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. पाठक, आर.पी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली।
6. पाठक, आर.पी. (2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी, पियर्सन एजुकेशन, नॉलेज पार्क, नोएडा (उ.प्र.)
7. पाण्डेय, के.पी. (1992) अभिक्रमित अधिगम की टेक्नोलॉजी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.)।
8. शर्मा, आर.ए. (2000) शिक्षा तकनीकी के आधार, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)

9. शर्मा, आर.ए. (2005) सूचना सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीक, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
10. शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, प्रकाशन – राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
11. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2012) पाठ्यचर्या निर्देशन एवं तुलनात्मक शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. NCF-2005, 2009, NCERT, New Delhi.
13.
14. Bhutt B.D And Sharma, S.R, (1992) Principles Of Curriculum Construction, Kanishka Publishing House, New Delhi
15. Aggarwal, J.C (1990) Curriculum Reforms in india, Doaba House Delhi
16. Manidi M.R and Ravishankar s, (1984) Curriculum Development And Education Technology, Sterling Publisher, New Delhi.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 क (ii) प्रारम्भिक शिक्षा में शैक्षिक प्रबन्धन एवं नेतृत्व

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 क (ii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- प्रारम्भिक स्तर पर शैक्षिक प्रबन्धन की नीतियों एवं सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- शैक्षिक प्रबन्धन कें कार्यो– नियोजन, संगठन, नियंत्रक, अनुश्रवण एवं समन्वय की दक्षता विकसित करना।
- प्रारम्भिक शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्धन की समस्यओं के प्रति संवेदनशील बनाना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 प्रारम्भिक शिक्षा में प्रबन्धन – अवधारणा, उद्देश्य, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, प्रक्रिया, तत्त्व एवं प्रबन्धन के सिद्धान्त।

इकाई–2 प्रारम्भिक शिक्षा में प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रकार्य–(विद्यालय एवं कक्षा के स्तरों पर **)–** नियोजन–अर्थ प्रक्रिया एवं प्रकार संगठन अर्थ एवं प्रकिया, अनुश्रवण एंव समन्वय प्रकिया एवं महत्त्व। प्रतिवेदन तथा बजट निर्माण– प्रक्रिया एवं आवश्यकता।

इकाई–3 प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित संस्थाएं एवं कार्यक्रम – संस्थाएं– राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT), जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान (DIET), ब्लाक रिर्सोस सेंटर (BRC), क्लस्टर सिर्सोर सेंटर (CRC), के मध्य समन्वय एवं समस्याएं। कार्यक्रम– सर्व शिक्षा अभियान (SSA), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), राष्ट्रीय प्रारम्भिक शिक्षा मिशन (NEEM),– समस्याएं एवं उनका निहितार्थ।

इकाई–4 प्रारम्भिक शिक्षा के प्रबन्धन में नेतृत्व – नेतृत्व की अवधारणा, शैली नेतृत्व के प्रकार–एकतान्त्रिक प्रजातान्त्रिक और हस्तक्षेप रहित। नेतृत्व के सिद्धान्त – परिस्थित्यात्मक एवं मैनेजिरियल ग्रिड सिद्धान्त, शैक्षिक–प्रबन्धन में सिद्धान्तों की उपयोगिता। परिस्थितिगत नेतृत्व एवं प्रभावी प्रबन्धन हेतु उपयोग।

इकाई–5 प्रबन्धन में क्षमता संवर्द्धन – प्रारम्भिक स्तर के प्रबन्धन में प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों की क्षमता विकास कें संकेतक (Perfomance Indicators) मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त प्रविधियां स्वाट विश्लेषण (SWOT) सतत् विकास परक मूल्यांकन, केजनिंग तथा क्रियात्मक अनुसन्धान द्वारा क्षमता विकास।

सत्रीय कार्य **80 अंक**

निम्नलिखित में से कोइ दो

1. विद्यालय या कक्षा आधारित स्वाट विश्लेषण एवं प्रतिवेदन।
2. प्रारम्भिक शिक्षा में सम्बन्धित किसी एक संस्था कें प्रयासों /कार्यक्रम/अभियान की समीक्षा आधारित दत्त कार्य।
3. विद्यालय स्तरीय प्रबन्धन से सम्बन्धित समस्याओं पर परिचर्चा एवं प्रतिवेदन निर्माण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. सुखिया एस.पी, (1996)विद्यालय प्रशासन एवं संगठन–विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. कुदेसिया, उमेश चन्द्र (1995) शिक्षा प्रशासन– विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. प्रसाद, केशव, (1998) विद्यालय व्यवस्था,– विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
4. भारद्वाज, दिनेश चन्द्र (2000) विद्यालय प्रशासन, विनोद पुस्तक भंडार,आगरा।
5. शर्मा, देव दत्त, (2001) शैक्षिक प्रबन्धन कें मूल तत्त्व– विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
6. जोशी,रजनी, (2000) विद्यालय प्रशासन एवं प्रबन्धन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. मुखोपाध्याय, एम. (2003) टोटल क्वालिटी मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, न्यूपा।
8. मुखोपाध्याय, एम. (2003) सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन, न्यूपा।
9. राष्ट्रीस शिक्षा नीति 1986 तथा 1992।
10. मानव संसाधन मंत्रालय के विभिन्न परियोजनाओं का प्रतिवेदन।
11. पाठक, आर.पी. (2010) शैक्षिक प्रबन्धन, राधा प्रकाशन अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली।
12. Bhavnagar & Agrawal, (2005) Education Administration, Loyal Book Depot, Meerut.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 क (iii) प्रारम्भिक शिक्षा में अधिगम आकलन

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 क (iii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- प्रारम्भिक शिक्षा में मापन,आकलन एवं मूल्यांकन की अवधारणाओं से अवगत कराना।
- प्रारम्भिक शिक्षा में संज्ञानात्मक एवं संज्ञानेत्तर योग्यताओं के आकलनार्थ उपकरणों से परिचित कराना।
- प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय हेतु उपलब्धि परीक्षण निर्माण क्षमता का विकास कराना।
- प्रारम्भिक शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रारूप एवं कार्ययोजनाओं के प्रयोग की दक्षता विकसित करना।
- प्रारम्भिक स्तर शिक्षा में परीक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के सन्दर्भ में सुधारात्मक प्रयासों को जानना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई 1. मापन, आकलन एवं मूल्यांकन – अवधारणा, उद्देश्य,महत्व कार्य एवं अन्तर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया, उद्देश्यों का निर्धारण, अधिगम क्रियाओं का आयोजन एवं व्यवहार परिवर्तन मूल्यांकन के प्रकार– निदानात्मक,संरचनात्मक एवं योगात्मक विधियॉं एवं अन्तर।

इकाई 2. प्रारम्भिक शिक्षा में मापन एवं आकलन के उपकरण – मापन के उपकरण एवं उनकी विशेषताएं निष्पादन आकलन–अभिप्राय, निर्माण, प्रयोग, गुण एवं सीमाएं। पोर्टफोलियो आकलन– अभिप्राय, निर्माण प्रयोग, गुण एवं सीमाएं।

इकाई 3. प्रारम्भिक शिक्षा में उपलब्धि परीक्षण निर्माण – योजना बनाना, ब्लू प्रिन्ट निर्माण, प्रश्नपत्र तैयार करना, प्रशासन परिणामों का विश्लेषण मानक एवं निकष संदर्भित परीक्षण (NRT&CRT) अभिप्राय अन्तर एवं प्रारम्भिक स्तर पर अनुप्रयोग।

इकाई 4. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन – अवधारणा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, महत्व एवं प्रकार्य प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा हेतु कार्ययोजनाएं संज्ञानात्मक एवं संज्ञानेतर पक्षों पर आधारित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रारूप शिक्षकों अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के आधार पर प्रतिपुष्टि प्रदान करने की युक्तियॉं।

इकाई 5. परीक्षा प्रणाली में नवाचार एवं परीक्षा सुधार – प्रारम्भिक शिक्षा में प्रचलित शिक्षा प्रणाली नवाचार ग्रेड प्रणाली प्रश्न बैंक अंक प्रणाली। परीक्षा सुधार के आयाम – लिखित मौखिक एवं प्रयोगात्मक परीक्षाओं एवं उनके संचालन व साधनों के प्रयोग में सुधार परीक्षा के सिद्वान्त एवं उसके बाधक तत्व राष्ट्रीय समितियों के सन्दर्भ में परीक्षा सुधार – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986–1992 यशपाल समिति एवं राममूर्ति समिति (प्रारम्भिक शिक्षा के सुधार के परिप्रेक्ष्य में)।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा में अध्यापित किसी एक विषय पर उपलब्धि परीक्षण निर्माण।
2. पारम्भिक स्तर की शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न मापन एवं मूल्याकन विधियों पर आधारित दत कार्य।
3. प्रारम्भिक स्तर के संज्ञानेतर पक्षों के मूल्यांकन पर आधारित परीक्षण निर्माण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. गुप्ता,एस.पी.(2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।
2. अस्थाना,विपिन,(1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,
3. भार्गव, महेश(1990) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,भार्गव बुक डिपो आगरा।
4. पाण्डेय के.पी.(2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विश्वद्यिालय प्रकाशन,वाराणसी।
5. शर्मा, आर.ए.(2002) शिक्षा मापन के मूल तत्व एवं सांख्यिकी,आर.लाल.बुक डिपो,मेरठ।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,1992 का प्रतिवेदन, भारत सरकार,नई दिल्ली।
7. प्रो. यशपाल समिति 1991–92 प्रतिवेदन,भारत सरकार नई दिल्ली।
8. प्रो.राममूर्ति समिति 1991 का प्रतिवेदन, भारत सरकार नई दिल्ली।

9- Mehta VI, First Mental Measurement Handbook for NCERT, New Delhi. The Concept of Evaluation in Eduction NCERT New Delhi.
10- Edward(1969) Technique of Attitued Scale Construcaiton Valkcils Felhter and Simmon pvt. Ltd. Bombay.
11- Thorndike And Hagen (1970) Measurement of Evaluation in Psycholgy and Education Wiley Easten Pvt. Ltd. New Delhi.
12- Anastassi (1982) Psychological Testing.Mc Millan Company New York
13- UGC Examiniation Reform: A Plan of Action 1992.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 ख (i) माध्यमिक शिक्षा में पाठ्यक्रम विकास

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 ख (i) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- पाठ्यक्रम के आधारभूत तत्वों एवं सिद्वान्तों से अवगत कराना।
- पाठ्यक्रम विकास की चार अवस्थाओं यथा नियोजन,निर्माण,क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन से अवगत कराना।
- माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के किसी विषय पर पाठ्यक्रम निर्माण करने की दक्षता विकसित करना।
- माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में प्रयुक्त पाठ्यक्रमों का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिप्रेक्ष्य की अपेक्षाओं के अनुरूप मूल्यांकन करने की दक्षता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई 1. पाठ्यक्रम एवं उसके आधार – पाठ्यक्रम–अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत घटक, सिद्वान्त एवं प्रकार माध्यमिक स्तर की शिक्षा हेतु प्रयुक्त प्रकार। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना 2005 एवं माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम के आधार–दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक

इकाई 2. पाठ्यक्रम नियोजन – अभिप्राय, नियोजन के आधारभूत बिन्दू – विषय की प्रकृति सामाजिक विकासात्मक कारक, शिक्षक सम्बन्धित कारक, संस्थागत कारक, पर्यावरणीय एवं अर्थशास्त्रीय कारक। माध्यमिक शिक्षा के स्तर के पाठ्यक्रम नियोजन के मुख्या कारक।

इकाई 3. पाठ्यक्रम निर्माण प्रक्रिया – अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निरूपण, विषयवस्तु निर्धारण, विषयवस्तु के सापेक्षित भार का विशिष्टीकरण, शिक्षण अधिगम व्यूह रचनाओं का चयन, सन्दर्भ ग्रन्थ सामग्रियों का चयन तथा मूल्यांकन प्रक्रिया का विशिष्टीकरण माध्यमिक स्तर की शिक्षा से सम्बन्धित किसी पाठ्यक्रम निर्माण पर आधारित दृष्टान्तीकरण।

इकाई 4. पाठ्यक्रम विकास के प्रतिमान एवं क्रियान्वयन – चयनित प्रतिमान (टाइलर प्रतिमान ,ताबा प्रतिमान सेलर और अलेक्जैण्डर मिलर और सेलर प्रतिमान रोजर्स प्रतिमान ओपन क्लासरूप प्रतिमान) पाठ्यक्रम क्रियान्वयन विषयवस्तु विश्लेषण इकाई अभिकल्पन और उपयुक्त प्रस्तुतीकरण माध्यम।

इकाई 5. पाठ्यक्रम मूल्यांकन (माध्यमिक स्तर की शिक्षा के सन्दर्भ में) – अवधारणा, सूक्ष्म एवं बृहद स्तर, विधियॉ, संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में पाठ्यक्रम मूल्यांकन मानक एवं निकष संदर्भित उपागम आधारित पाठ्यक्रम मूल्यांकन केन्द्रिय एवं राजकीय बोर्ड की माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों की तुलनात्मक समीक्षा।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. माध्यमिक स्तर की शिक्षा के किसी एक विषय के उप–विषयों पर सापेक्षित भार के विशिष्टीकरण पर आधारित दत कार्य।
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय के पाठ्यक्रम की समीक्षा पर आधारित दत कार्य।
3. माध्यमिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय के पाठ्यक्रम निर्माण।
4. विभिन्न शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर की शिक्षा के किसी कक्षा के पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन आधारित दत कार्य।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाण्डेय के.पी.(2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विश्वद्यिालय प्रकाशन,वाराणसी।
2. गुप्ता,एस.सी.(2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. पाठक,आर.पी एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय(2012) पाठ्यचर्या,निर्देशन एवं तुलनात्मक शिक्षा कनिष्का प्रकाशन नई दिल्ली।

4. पाल, हंसराज एवं पाल, राजेन्द्र (2006) पाठ्यचर्या, कल आज और कल शिप्रा पब्लिकेशन विकास मार्ग,नई दिल्ली।
5. यादव सियाराम (2008) पाठ्यक्रम विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
6- Bhat, B.D. & Sharma S.R.(1992) Principles of Curriculum Construcation Kanishka Publication House. New Delhi.
7- Aggarwal J.C.(1990) Curriculum Reforms in India, Doaba House Delhi.
8- Manidi M.R. and Ravishankar S. (1984) Curriculum Develoment And Education Techonlogy Sterling Publisher New Deilhi.
9- NCF-2005,2009 NCERT New Delhi.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 ख (ii) माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक प्रबन्धन एवं नेतृत्व

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 ख (ii) — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक प्रबन्धन की नीतियों एवं सिद्वान्तों से अवगत कराना।
- शैक्षिक प्रबन्धन के कार्या– नियोजन, संगठन,अनुश्रवण, एवं समन्वय की दक्षता विकसित करना।
- माध्यमिक शिक्षा में गुणवता प्रबन्धन की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई 1. माध्यमिक शिक्षा में प्रबन्धन– अवधारणा, उद्देश्य,ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य,प्रक्रिया,तत्व एवं प्रबन्धन के सिद्वान्त।

इकाई 2. माध्यमिक शिक्षा में प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रकार्य (विद्यालय एवं कक्षा के स्तरों पर) नियोजन अर्थ प्रक्रिया एवं प्रकार, संगठन– अर्थ एवं प्रक्रिया,अनुश्रवण एवं समन्वय– प्रक्रिया एवं महत्व प्रतिवेदन तथा बजट निर्माण–प्रक्रिया एवं आवश्यकता।

इकाई 3. माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित संस्थाए एवं कार्यक्रम– राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान(SIERT) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय शिक्षा परिषद् (NIOS) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) राज्य शिक्षा बोर्ड (SBE) से सम्बन्धित अभियान एवं कार्यक्रम– समस्याएं एवं उनका निहितार्थ।

इकाई 4. माध्यमिक शिक्षा के प्रबन्धन में नेतृत्व– नेतृत्व की अवधारणा,शैली,नेतृत्व के प्रकार– एकतान्त्रिक प्रजातान्त्रिक और हस्तक्षेप रहित। नेतृत्व के सिद्वान्त– परिस्थित्यात्मक एवं मैनेजिरियल ग्रिड सिद्वान्त शैक्षिक–प्रबन्धन में सिद्वान्तों की उपयोगिता परिस्थितिगत नेतृत्व एवं प्रभावी प्रबन्धन हेतु उपयोग।

इकाई 5. प्रबन्धन में क्षमता संवर्द्वन– माध्यमिक स्तर के प्रबन्धन में प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों की क्षमता विकास के संकेतम मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त प्रविधियॉ स्वाट विश्लेषण सतत् विकास परक मूल्यांकन केजरिंग तथा क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा क्षमता विकास।

सत्रीय कार्य – — **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. विद्यालय या कक्षा आधारित स्वाट विश्लेषण एवं प्रतिवेदन।
2. माध्यमिक शिक्षा में सम्बन्धित किसी एक संस्था के प्रयासों/कार्यक्रम/अभियान की समीक्षा आधारित दत कार्य।
3. विद्यालय स्तरीय प्रबन्धन से सम्बन्धित समस्याओं पर परिचर्या एवं प्रतिवेदन निर्माण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. सुखिया एस.पी.(1996) विद्यालय प्रशासन एवं संगठन– विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
2. कुदेसिया, उमेश चन्द्र (1995) शिक्षा प्रशासन विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा।
3. प्रसाद,केशव (1998) विद्यालय व्यवस्था विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
4. भारद्वाज,दिनेश चन्द्र (2000) विद्यालय प्रशासन,विनोद पुस्तक भंडार आगरा।
5. शर्मा,देव दत्त (2001) शैक्षिक प्रबन्धन के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
6. जोशी रजनी (2000) विद्यालय प्रशासन एवं प्रबन्धन,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. NCERT का प्रतिवेदन।
8. CBSE का प्रतिवेदन।
9. SBE का प्रतिवेदन।
10. राजस्थान शिक्षा बोर्ड का प्रतिवेदन।

11. पाठक आर.पी.(2010) शैक्षिक प्रबन्धन,राधा प्रकाशन,अंसारी रोड़ दरियांगज नई दिल्ली।

12. भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2013) विद्यालयी शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान आकांक्षा प्रकाशन नई दिल्ली।

13. B hatnagaer & Agrawal (2005) Education Administration Loyal Books Depot, Meerut.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–11 ख (iii) माध्यमिक शिक्षा में अधिगम आकलन

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 ख (iii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- माध्यमिक शिक्षा में मापन,आकलन एवं मूल्यांकन की अवधारणाओं से अवगत कराना।
- माध्यमिक शिक्षा में संज्ञानात्मक एवं संज्ञानेत्तर योग्यताओं के आकलनार्थ उपकरणों से परिचित कराना।
- माध्यमिक स्तर की शिक्षा के किसी विषय हेतु उपलब्धि परीक्षण निर्माण क्षमता का विकास कराना।
- माध्यमिक शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रारूप एवं कार्ययोजनाओं के प्रयोग की दक्षता विकसित करना।
- माध्यमिक स्तर शिक्षा में परीक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के सन्दर्भ में सुधारात्मक प्रयासों को जानना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई 1. मापन, आकलन एवं मूल्यांकन – अवधारणा, उद्देश्य, महत्व कार्य एवं अन्तर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया, उद्देश्यों का निर्धारण, अधिगम क्रियाओं का आयोजन एवं व्यवहार परिवर्तन मूल्यांकन के प्रकार– निदानात्मक, संरचनात्मक एवं योगात्मक विधियॉ एवं अन्तर।

इकाई 2. माध्यमिक शिक्षा में मापन एवं आकलन के उपकरण – मापन के उपकरण एवं उनकी विशेषताएं निष्पादन आकलन–अभिप्राय, निर्माण, प्रयोग, गुण एवं सीमाएं। पोर्टफोलियो आकलन– अभिप्राय, निर्माण प्रयोग, गुण एवं सीमाएं।

इकाई 3 माध्यमिक शिक्षा में उपलब्धि परीक्षण निर्माण – योजना बनाना, ब्लू प्रिन्ट निर्माण, प्रश्नपत्र तैयार करना, प्रशासन परिणामों का विश्लेषण मानक एवं निकष संदर्भित परीक्षण (NRT&CRT) अभिप्राय अन्तर एवं प्रारम्भिक स्तर पर अनुप्रयोग।

इकाई 4. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन – अवधारणा,ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य,महत्व एवं प्रकार्य प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा हेतु कार्ययोजनाएं संज्ञानात्मक एवं संज्ञानेतर पक्षों पर आधारित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रारूप शिक्षकों अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के आधार पर प्रतिपुष्टि प्रदान करने की युक्तियॉ।

इकाई 5. परीक्षा प्रणाली में नवाचार एवं परीक्षा सुधार – प्रारम्भिक शिक्षा में प्रचलित शिक्षा प्रणाली नवाचार ग्रेड प्रणाली प्रश्न बैंक अंक प्रणाली। परीक्षा सुधार के आयाम – लिखित मौखिक एवं प्रयोगात्मक परीक्षाओं एवं उनके संचालन व साधनों के प्रयोग में सुधार परीक्षा के सिद्वान्त एवं उसके बाधक तत्व राष्ट्रीय समितियों के सन्दर्भ में परीक्षा सुधार – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं संशोधित नीति 1992 यशपाल समिति एवं राममूर्ति समिति (प्रारम्भिक शिक्षा के सुधार के परिप्रेक्ष्य में)।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. माध्यमिक स्तर की शिक्षा में अध्यापित किसी एक विषय पर उपलब्धि परीक्षण निर्माण।
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न मापन एवं मूल्याकन विधियों पर आधारित दत कार्य।
3. माध्यमिक स्तर के संज्ञानेतर पक्षों के मूल्यांकन पर आधारित परीक्षण निर्माण।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. गुप्ता,एस.पी.(2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।
2. अस्थाना,विपिन,(1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,
3. भार्गव, महेश(1990) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,भार्गव बुक डिपो आगरा।
4. पाण्डेय के.पी.(2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विश्वद्यिालय प्रकाशन,वाराणसी।
5. शर्मा, आर.ए.(2002) शिक्षा मापन के मूल तत्व एवं सांख्यिकी,आर.लाल.बुक डिपो,मेरठ।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,1992 का प्रतिवेदन, भारत सरकार,नई दिल्ली।
7. प्रो. यशपाल समिति 1991–92 प्रतिवेदन,भारत सरकार नई दिल्ली।
8. प्रो.राममूर्ति समिति 1991 का प्रतिवेदन, भारत सरकार नई दिल्ली।

9- Mehta VI, First Mental Measurement Handbook for NCERT, New Delhi. The Concept of Evaluation in Eduction NCERT New Delhi.
10- Edward(1969) Technique of Attitued Scale Construcaiton Valkcils Felhter and Simmon pvt. Ltd. Bombay.
11- Thorndike And Hagen (1970) Measurement of Evaluation in Psycholgy and Education Wiley Easten Pvt. Ltd. New Delhi.
12- Anastassi (1982) Psychological Testing.Mc Millan Company New York
13- Bloom et.al (1956) Taxonomy of Educaiton Objecties Hand Book I David Mc Kay Company New Delhi.
14- UGC Examiniation Reform: A Plan of Action 1992.

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–12 (i) भारतीय शिक्षा का इतिहास

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 261 ख (iii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्यः–

- भारतीय शिक्षा के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की वर्तमान समस्याओं का समीक्षात्मक अवबोध विकसित कराना।
- भारतीय दर्शन में समाविष्ट पद्वतियों एवं मूल्यों का आधुनिक संदर्भ में निहितार्थो का अवलोकन करना।
- भारतीय वाङःमय में चर्चित व्यवस्थाओं एवं मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- प्राचीन,बौद्वकालीन,मध्यकालीन शिक्षा की विशेषताओं तथा भारत में स्वतंत्रता से पूर्व शिक्षा की समस्याओं से परिचित हो सकेगें।
- स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय शिक्षा के विकास से परिचित हो सकेगें।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई 1.

- प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं दर्शन का उद्‌गम और विकास– वेद, उपनिषद् एवं अन्य प्राचीन भारतीय वाङ्मय के संदर्भ में भारतीय दर्शन–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों की दृष्टि भारतीय दर्शन की समग्र दृष्टि–वैदिक, औपनिषदिक, न्याय वैशेषिक,सांख्य योग, वेदान्त, चार्वाक जैन तथा बौद्व।

इकाई 2.

- भारतीय शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – वैदिककालीन शिक्षा, बौद्वकालीन शिक्षा, वैदिक कालीन शिक्षा तथा बौद्वकालीन शिक्षा में समानता तथा असमानता मध्यकालीन शिक्षा (मुस्लिम कालीन शिक्षा) आधुनिक शिक्षा (स्वतन्त्रता से पूर्व तथा स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ में)

इकाई 3.

- प्राचीन भारतीय शिक्षा में विविधता व्यावसायिक शिक्षा,स्त्री शिक्षा कला शिक्षा विज्ञान की शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा आयुर्वेद ज्योतिष एवं पौरोहित्य के विशेष सन्दर्भ में प्राचीन भारतीय शिक्षादर्शन की सामाजिक अवधारणा वर्णाश्रम का स्वरूप शिक्षा पर प्रभाव।

इकाई 4.

- स्वतन्त्रता से पूर्व शिक्षा की रूपरेखा एवं नीतियॉ – मैकाले का घोषणा पत्र (1835) वुड घोषणा पत्र (1984) हण्टर आयोग (1882) लार्ड कर्जन नीति (1902) गोखले विल (1910) सैडलर आयोग (1917) हर्टाग समिति (1929) बेसिक शिक्षा (1937) सार्जेण्ट रिपोर्ट (1944)

इकाई 5.

- माध्यमिक शिक्षा की अवधारणा, संरचना तथा शिक्षा व्यवस्था में इसका स्थान।
- माध्यमिक शिक्षा के लक्ष्य, उद्‌देश्य एवं पाठ्यक्र।
- माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण।
- स्वतन्त्रता के पश्चात माध्यमिक शिक्षा का गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास।
- स्वतन्त्रता के पश्चात माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न आयोगों की सिफारिशें।
- स्वतन्त्रता के पश्चात शिक्षा के विकास में विभिन्न आयोगों एवं नीतियों की भमिका विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66), भारतीय शिक्षा नीति (1986), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992), राष्ट्रीय परिचर्या विकास (NCF) (2005) एवं 2009 तथा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005)।
- शिक्षा के केन्द्रीय अभिकरण (NCTE, NCERT, N.U.E.P.A.) नीपा तथा UGC के कार्य एवं भूमिका।
- शिक्षा के राज्यस्तरीय अभिकरण (IASE, CTE, DIET)

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोई दो

1. भारतीय दर्शन में परिलक्षित विषय पर संगोष्ठी आयोजित करना।
2. उपनिषदों में वर्णित कथानकों/उपाख्यानों का संकलन करना।
3. भारतीय वाड्मय में विवेचित मूल्यों की प्रासंगिकता पर आधारित कार्यशाला।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाठक,आर.पी.(2010) प्राचीन भारतीय शिक्षा कनिष्का प्रकाशन अंसारी रोड़ दरियांगज नई दिल्ली।
2. पाठक,आर.पी.(2009) भारतीय परम्परा में शैक्षिक चिन्तन कनिष्का प्रकाशन अंसारी रोड़ दरियांगज नई दिल्ली।
3. झा नगेन्द्र (1995) वैदिक शिक्षा पद्वति एवं आधुनिक शिक्षा पद्वति वेकटेश प्रकाशन नई दिल्ली।
4. मिश्र भास्कर (1997) शिक्षा एवं संस्कृति नये सन्दर्भ भावना प्रकाशन नई दिल्ली।
5. वाठक,आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2013) वेदान्त शिक्षा दर्शन कनिष्का प्रकाशन अंसारी रोड़ दरियांगज नई दिल्ली।
6. पाण्डेय रामशक्ल (2005) मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य,आर.लाल.बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
7. शर्मा.आर.ए.(2002) मानव मूल्य एवं शिक्षा आर.लाल बुक डिपो मेरठ उ.प्र.।
8. न्यूपा के प्रविवेदन (शिक्षा के इतिहास एवं विकास से संबंधित)।

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–12 (ii) मानवाधिकार शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 262 (ii) कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- मानवाधिकार शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता से परिचित कराना।
- भारत में मानवाधिकारों के विकास तथा संविधान में वर्णित अधिकारों का ज्ञान कराना।
- मानवाधिकार शिक्षण की विभिन्न विधियों से परिचित कराकर उनके प्रयोग में सक्षम बनाना।
- मानवाधिकार शिक्षा में विभिन्न संस्थाओं तथा संसाधनों की भूमिका से अवगत कराना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई–1 मानवाधिकार शिक्षा तथा विकास –अवधारणा (भारतीय तथा पाश्चतत्य सन्दर्भ में) आवश्यकता,उद्देश्य तथा महत्त्व, मानवाधिकारों का विकास। मानवाधिकार सार्वभौमिक घोषणा पत्र तथा मानवाधिकार सम्मेलन मानवाधिकार सार्वभौमिक घोषणा पत्र में वर्णित अधिकार समानता, शिक्षा जीवन, स्वतंन्त्रता तथा सम्मान, आर्थिक राजनैतिक तथ सामाजिक अधिकार , प्रमुख मानवाधिकार सम्मेलनों (Conventions) का परिचय तथा उनके द्वारा किये गये मानवाधिकार संरक्षण के प्रयास।

इकाई–2 विशिष्ट वर्गो के मानवाधिकार–बालकों के शोषण के विरूद्ध अधिकार, अल्पसंख्यकों, महिलाओं तथा सुविधा वंचित वर्गो के अधिकार।

इकाई–3 भारत मे मानवाधिकार– भारत में मानवाधिकारों का विकास, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य संविधान में वर्णित मूलभूत अधिकार तथा नीति निर्देशक सिद्धान्त।

इकाई–4 भारत मानवाधिकार के सम्बन्ध में किये गये प्रयास तथा कार्यरत विभिन्न संस्थाएं एवं संसाधन–राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राज्य स्तरीय मानवाधिकार आयोग तथा महिला आयोग के कार्य, बालश्रम कानून आदि। अन्तर्राष्ट्रीय एवं संस्थाएं–यू.एन.ओ. मानवाधिकार परिषद् अध्यापक शिक्षा परिषद्, स्वयंसेवी संस्थाएं, जनसंचार के माध्यम, इन्टरनेट आदि।

इकाई–5 मानवाधिकार शिक्षण की विधियां तथा व्यूहरचनायें –भूमिका निर्वाह, अनुरूपण, व्यक्तिवृत्त अध्ययन,वाद–विवाद, मस्तिष्क मंथन मूल्य स्पष्टीकरण।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोइ दो

1. अल्पसंख्यकों, महिलाओं तथा सुविधावंचित वर्गो में से किन्ही एक पर परिचर्चा।
2. मानवाधिकार से आहत संवर्गो को दृष्टिगत रखते हुए व्यष्टि अध्ययन करना।
3. मानवाधिकार के प्रति जागरूकता विकसित करने हेतु संगोष्ठी का आयोजन करना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. जयश्री, (2008) मूल्य,पर्यावरण और मानवाधिकार की शिक्षा दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन।
2. शर्मा एवं माहेश्वरी (2005) मूल्य पर्यावरण और मानवाधिकार की शिक्ष, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ उ.प्र.
3. Sharma A.D, (2007) Lahiry D, Human Rights Education in india Schools Academi c Excellence Publication, Delhi.
4. Waghmare B.S. (2001) Human Human Rights: Problemas and Problemas Kalinga Publication, Delhi.
5. Selby David, (1998)) Human Human Rights, A Cambridge Univesity Press.
6. Dhand H, (2002) Teaching) Human Rights,A Hand book for Teacher Educators, Authorsprss Bhopal.
7. Justice M. (1998) Rama Jois, Human Rights and Indian values. NCTE, New Delhi.
8. शास्त्री मोहम्मद हनीफ वेदों में मानवाधिकार।
9. मानवाधिकार आयोग का प्रतिवेदन।

शिक्षाचार्य – चतुर्थ सत्रार्द्ध

प्रश्नपत्र–12 (iii) दूरस्थ शिक्षा

अध्येयांश कूटांक (Course Code) = 262 (iii) — कुल क्रेडिट्स = 04

क्रियान्वयन घण्टे = 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक = 100

उद्देश्य–

- दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति और आवश्यकता कसे परिचित कराना।
- सूचना प्रोद्योगिकी, संचार प्रकारों एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में उनके उययोग से अवगत कराना।
- छात्र सहायता सेवाओं के विविध प्रकारों की जानकारी तथा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से इन सेवाओं के विविध कार्यक्रमों के प्रबन्ध कौशल की योग्यता विकसित करना।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के मूल्यांकन के गुण और स्तर बढाने की योग्यता प्रदान करना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई–1 दूरस्थ शिक्षा और इसका विकास– अवधारणा शिक्षण–अधिगम तत्त्व, आवश्यकता, विशेषयें, विकास। भारत में दुरस्थ शिक्षण अधिगम पद्धति। छात्र सहायता सेवायें, दूरस्थ शिक्षा द्वारा तकनीकी एवं व्यावसायिक कार्यक्रम, महिलाओं के लिए दूरस्थ शिक्षा और ग्रामीण विकास ।

इकाई–2 दूरस्थ हस्तक्षेपो व्यूह रचनाएं–सूचना और संचार प्रद्योगिकी एवं उनका निहितार्थ। स्वनिर्देशित सामग्री और अभिकल्प का निर्माण। शिक्षा में इलेक्ट्रनिक माध्यम व दूरस्थ शिक्षा।

इकाई–3 गुणात्मकता उन्नयन एवं कार्यक्रम मूल्यांकन– दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता, आश्वसन। प्रतिश्रुत दूरस्थशिक्षा के निर्माण मानक, यान्त्रिक निर्माणकार। कार्यक्रम मूल्यांकन।

इकाई–4 दूरस्थ शिक्षा में लागत विश्लेषण– सम्प्रत्यय, आवश्यकता, प्रक्रिया। दूरस्थ शिक्षा में नये आयाम, भविष्य के लिये आश्वासन।

इकाई–5 दूरस्थ शिक्षा एवं औपचारिक आवासीय शिक्षा में सम्बन्ध–अवधारणाएं एवं भारतीय सन्दर्भ मुें समस्याएं। दूरस्थ शिक्षा मे शोध–दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित भारतीय सन्दर्भ में शोध के मुख्य बिन्द, गुणवत्ता की दृष्टि से उनके निहितार्थ।

सत्रीय कार्य — **20 अंक**

निम्नलिखित में से कोइ दो

1. दूरस्थ शिक्षा में प्रविष्ट छात्रों की समस्याओं का व्यष्टि अध्ययन।
2. दूरस्थ शिक्षा के आयोजन स्तर पर केन्द्रित समस्याओं पर संगोष्टी आयोजित करना।
3. दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता के आयाम विकसित करने की दृष्टि से सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग विषय पर कार्यशाला आयोजित करना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाठक, आर.पी.(2010) दूरस्थ शिक्षा के विविध आयाम, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।
2. पाण्डेय, लता (1995) दूरवर्ती शिक्षा, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, उ.प्र.।
3. प्रो. कुलन्दयी स्वामी – दाउनिंग डावर्स।
4. Reddy, G.Ram, (1984) Open Education System in India, Its Place Potential, APOU, Hyderabad
5. Sharma, R.A. (1994) Distance Education Theory, Practice and Research, LBD, Meerut(U.P)
6. Keegan, D.J., (1985) The Foundation Of Distance Education, London, Groom Helm.
7. Sharma, Madhulika, (1990) Distance Education, Concepts and Priciples, Kaniksha Publishers, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi.

लघुशोध प्रबन्ध

कोर्स कोड – 263

कुल क्रेडिट्स – 08

कुल अंक – 200

लघुशोध कार्य सम्पादन एवं विभागीय समिति का अनुमोदन

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षापरिषद् के आदेशानुसार लघुशोध प्रबन्ध का पाठ्यक्रम निरन्तरता के साथ संचालित किया जायेगा जिसमें छात्र – **प्रथम सेमेस्टर** में लघुशोध प्रबन्ध हेतु शीर्षक एवं मार्गदर्शक का चयन करेगें। **द्वितीय सेमेस्टर** में चयनित विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं लेखन कार्य करेगें। **तृतीय सेमेस्टर** में शोध संक्षिप्तिका लेखन एवं प्रस्तुतीकरण तथा शोध उपकरण निर्माण, प्रतिदर्श चयन एवं शोध सम्बन्धित प्रदत्त संकलन कार्य करेगें। **चतुर्थ सेमेस्टर** में शोध सम्बन्धित संकलित आधार सामग्री का विश्लेषण एवं निर्वचन कर शोध प्रबन्ध का लेखन कार्य पूर्ण करेगें। शोध प्रबन्ध संस्कृत माध्यम में प्रस्तुति के लिए ही प्रस्तुत सकता है जिसे प्रस्तुति पूर्व संगोष्ठी में भी प्रस्तुत करना होगा। इसके बाद विभागीय समिति द्वारा अनुमोदन पश्चात् मूल्यांकन की कार्यवाही की जायेगी।

चतुर्थ सेमेस्टर में लघुशोध प्रबन्ध हेतु पाठ्यक्रमीय क्रियाएँ –

1. मार्गदर्शक के साथ सम्पर्क कक्षा (Contact Class) प्रतिदिन 2 घण्टे।
2. अपने शोध सम्बन्धित संकलित आधार सामग्री का संगठन एवं विश्लेषण कार्य।
3. लघुशोध प्रबन्ध का प्रस्तावित अध्यायों के रूप में लेखन कार्य।
4. प्रस्तुति पूर्व संगोष्ठी (Presubmission Seminar) में प्रस्तुतिकरण हेतु प्रस्ताव तैयार करना।

लघुशोध प्रबन्ध हेतु अंक विभाजन

लघुशोध प्रबन्ध	– 180 अंक	90 बाह्य 90 आन्तरिक
मौखिकी (बाह्य परीक्षण)	– 20 अंक	

नोट – लघुशोध प्रबन्ध का आन्तरिक मूल्यांकन शोधनिर्देशक द्वारा किया जाए।